राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं:

मुख्य कार्यालय

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

Ministry of Human Resource Development, Government of India

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-।।, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 (भारत)

दूरभाष : 91-11-26707700 फैक्स : 91-11-26707846

वेबसाइट: www.nbtindia.gov.in

बेंगलुरु

हॉल नं. 1, बीडीए शॉपिंग कॉम्प्लेक्स

बनाशंकरी 2 स्टेज

बेंगलुरु-560070

दूरभाष : 080-26711994

फैक्स : 080-26711994

ई-मेल : sro@nbtindia.org.in

कोलकाता

जलानसेवा ट्रस्ट बिल्डिंग, द्वितीय तल

61, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-700009

दूरभाष : 033-22413899

फैक्स : 033-22413899

ई-मेल : ero@nbtindia.org.in

मुंबई

रवींद्र नाट्य मंदिर, प्रथम तल

पु.ल.देशपांडे महाराष्ट्र कला अकादमी

प्रभादेवी, मुंबई-400025

दूरभाष : 022-23720442, 24320380

फैक्स : 022-23720442

ई-मेल : nbtindiamumbai@yahoo.com

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

रा.पु.न्यास मेट्रो पुस्तक विक्रय केंद्र

- कश्मीरी गेट दिल्ली मेट्रो स्टेशन
- विश्वविद्यालय दिल्ली मेट्रो स्टेशन

यूनिवर्सल बुक एंपोरियम

(रा.पु.न्यास की पुस्तकों का विशिष्ट केंद)

पी-4675/11, प्रथम तल, गणपति भवन

अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110092

रा.पु.न्यास पुस्तक विक्रय केंद्र-सह-पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र

भू-तल, इवीके संपत बिल्डिंग

डीपीआइ कैंपस, कॉलेज रोड

नुनगंबक्कम, चेन्नै-600006

रा.पु.न्यास पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र

- **हैदराबाद**
  आंध्र महिला सभा, हैदराबाद
  महिला सभा बिल्डिंग्स
  यूनिवर्सिटी रोड, हैदराबाद-500044
- **गुवाहाटी**
  असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बिल्डिंग
  डैग नं. 531, जीएमसी वार्ड नं. 45, हेदायतपुर
  मौजा उलुबरी, गुवाहाटी-781003
- **अगरतला**
  लाइब्रेरी (पुरा ग्रंथागार), अगरतला
  एएमसी का भू-तल, अगरतला
  पुलिस थाना-पूर्वी अगरतला
  सब डिविजन एवं सब रजिस्ट्री-सदर, पश्चिम त्रिपुरा
- **पटना**
  73/40, ऑफिसर्स फ्लैट, बेली रोड, पटना, बिहार
- **कटक**
  उत्कल साहित्य समाज कैंपस
  टाउन हॉल रोड, तेलेंगा बाजार
  कटक-753009, ओडिशा
- **एर्णाकुलम**
  बी 2, रेवेन्यू टॉवर (निकट गवर्नमेंट लॉ कॉलेज)
  पार्क एवेन्यू, एर्णाकुलम, कोच्चि

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें **बेंगलुरु एवं देहरादून** के कुछ चुनिंदा पोस्ट ऑफिस में भी उपलब्ध हैं।

सूची-पत्र 2015

नवसाक्षरों के लिए हिंदी पुस्तकें

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत : एक परिचय

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन एक शीर्ष निकाय है, जो गत 56 वर्षों से पुस्तक प्रकाशन एवं पुस्तकोन्नयन के क्षेत्र में सक्रिय है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का वर्तमान मुख्य कार्यालय नई दिल्ली के वसंत कुंज इंस्ट्टीट्यूशनल एरिया में अवस्थित है। 'नेहरू भवन' नाम से जाने जाने वाले इस नवनिर्मित भवन में सन् 2008 में आने से पूर्व न्यास का मुख्यालय नई दिल्ली के ग्रीन पार्क क्षेत्र में अवस्थित था। सन् 1957 में अपनी स्थापना के तुरंत बाद राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने निजामुद्दीन इलाके की एक इमारत से अपना कामकाज शुरू किया था।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत स्थापना के समय से प्रचलित अपने मूल नाम, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम से भी जाना जाता है।

न्यास पुस्तकोन्नयन एवं पुस्तक संस्कृति के देशभर में प्रचार-प्रसार के अपने महत्तर उद्देश्य की पूर्ति के साथ-साथ प्रकाशन के क्षेत्र में भी सक्रिय है। न्यास हिंदी तथा अँग्रेजी सहित भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। ये भाषाएँ हैं : असमिया, उर्दू, ओड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, नेपाली, पंजाबी, बांग्ला, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, सिंधी, राजस्थानी और भोजपुरी।

न्यास से बच्चों की चुनिंदा पुस्तकों को गोंडी, भीली, संताली तथा पूर्वोत्तर की कुछ जनजातीय भाषाओं–आओ, नागा, कोकबोरक, खासी, गारो, नेवारी, बोडो, भुटिया, मिसिंग, मिजो, लिम्बू और लेप्चा में भी अनूदित कराया गया है। हाल में हमने भारत की कुछ अन्य क्षेत्रीय बोलियों-भाषाओं, यथा–हल्बी, भतरी आदि में भी न्यास की पुस्तकों का अनुवाद प्रकाशित किया है।

हम अभी तक 32 भाषाओं में 17,000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर चुके हैं जिसमें मूल, पुनर्मुद्रण और भारतीय भाषाओं व अँग्रेजी में अनुवाद शामिल है।

न्यास निम्नलिखित सुपरिभाषित पुस्तकमालाओं के अंतर्गत पुस्तकें प्रकाशित करता है :

भारत-देश और लोग, तरुण भारती, लोकोपयोगी विज्ञान, लोकोपयोगी सामाजिक विज्ञान, आदान-प्रदान (अंतर्भारतीय पुस्तकमाला), भारतीय साहित्य पुस्तकमाला, भारतीय साहित्य निधि, विश्व साहित्य, हिंदी नवजागरण के अग्रदूत, राष्ट्रीय जीवनचरित, आत्म

जीवनचरित, लोक-संस्कृति और साहित्य, सृजनात्मक शिक्षा, भारतीय डायस्पोरा अध्ययन, एफ्रो-एशियाई देश, सतत शिक्षा, एशिया-प्रशांत सहप्रकाशन कार्यक्रम, नेहरू बाल पुस्तकालय, नवसाक्षर साहित्यमाला, विविध, स्वर्ण जयंती पुस्तकमाला।

इन पुस्तकमालाओं के अलावा, न्यास 'ऑल इंडिया कन्फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड', नई दिल्ली के सहयोग से दृष्टिबाधित पाठकों के लिए ब्रेल लिपि में भी पुस्तकें प्रकाशित करता है।

भारत में पुस्तक-संस्कृति के प्रसार एवं विदेशों में भारतीय पुस्तकों के प्रोन्नयन के लिए न्यास केंद्रीय अभिकरण के रूप में कार्य करता है। देशभर में पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों के क्रम में न्यास अब तक 22 विश्व पुस्तक मेले, 40 राष्ट्रीय पुस्तक मेले, 15 बाल पुस्तक मेले तथा असंख्य क्षेत्रीय पुस्तक समारोहों का आयोजन कर चुका है। सचल पुस्तक वाहन द्वारा पुस्तक परिक्रमा का आयोजन न्यास का एक अभिनव पहल है। पूर्वोत्तर के राज्यों में पुस्तकोन्नयन हेतु न्यास विशेष प्रयास करता है। इस क्षेत्र में भी अब तक 22 से अधिक पुस्तक मेलों का आयोजन किया जा चुका है। देशभर में विचार गोष्ठी, कार्यशाला आदि के भी समय-समय पर आयोजन किए जाते है। विदेशों में पुस्तकोन्नयन के क्रम में 350 से अधिक अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों में न्यास की भागीदारी उल्लेखनीय है। कुछ महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले हैं : फ्रैंकफर्ट (जर्मनी), बोलोना (इटली), बीजिंग (चीन), सियोल (द. कोरिया), शारजाह (सं.अ. अमीरात) आदि।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के 22वें संस्करण का आयोजन प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 15 से 23 फरवरी, 2014 की अवधि में हुआ था। मेले में लगभग 26 देशों एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भागीदारी के साथ लगभग 2200 स्टॉलों/स्टैंडों पर 1000 से अधिक भारतीय तथा विदेशी प्रदर्शकों ने भाग लिया, जिसमें प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता एवं वितरक आदि शामिल थे। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2014 का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा किया गया था। इस वर्ष पुस्तक मेले का थीम था–'कथासागर : भारतीय बाल साहित्य का महोत्सव'। लेखक मंच एवं बाल मंडप पुस्तक मेले के अन्य आकर्षण थे। पोलैंड को सम्मानित अतिथि देश बनाया गया था।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के 23वें संस्करण का 14 से 22 फरवरी, 2015 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजन किया जाएगा। इस पुस्तक मेले में सिंगापुर को अतिथि देश का सम्मान दिया गया है। इस बार फोकस देश की नई अवधारणा के तहत दक्षिण कोरिया को फोकस देश बनाया गया है। पुस्तक मेले का थीम होगा–पूर्वोत्तर भारत के उभरते स्वर। उल्लेखनीय है कि न.दि.वि.पु. मेला एशिया-अफ्रीका क्षेत्र के सबसे बड़े पुस्तक मेले के रूप में ख्यात है।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह का सारे देश में आयोजन न्यास की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन, 14 नवंबर से शुरू होकर 20 नवंबर को यह समाप्त होता है। इस अवसर पर पूरे देश में गोष्ठियों, कार्यशालाओं, पुस्तक प्रदर्शनियों

एवं बच्चों के लिए व बच्चों के द्वारा कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) न्यास द्वारा संचालित बाल साहित्य के प्रोन्नयन हेतु एक विशेष अनुभाग है। यह अनुभाग विभिन्न भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य के समन्वय, आयोजन और सहायता का कार्य करता है। न्यास मुख्यालय में रा.बा.सा.कें. का एक विशिष्ट पुस्तकालय-कक्ष भी है, साथ ही प्रलेखन केंद्र भी। रा.बा.सा.कें. बच्चों के लिए एक द्विभाषी बाल पत्रिका 'पाठक मंच बुलेटिन' का प्रकाशन भी करता है।

'किताब क्लब' की योजना न्यास की एक अभिनव योजना है। किताब क्लब के सदस्यों को न्यास की पुस्तकों की खरीद पर विशेष छूट दी जाती है, साथ ही पुस्तकें मंगाने पर डाक खर्च में छूट भी। यह सदस्यता व्यक्तिगत एवं सांस्थानिक, दो तरह की होती है। व्यक्तिगत सदस्यों के लिए जहाँ सदस्यता शुल्क 100/- रु. है वहीं संस्था के लिए 500/- रु., जो अप्रतिदेय है। सूचीपत्र के अंत में किताब क्लब सदस्यों के लिए नियम एवं शर्तों के विवरण के साथ सदस्यता प्रपत्र भी दिया गया है। देशभर में अब तक 50 हजार से अधिक किताब क्लब सदस्यों का पंजीयन हो चुका है।

आर्थिक सहायता योजना के अंतर्गत उन पुस्तकों के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है जिसके संबंध में एक निश्चित जरूरत महसूस की जाए।

न्यास से न्यास का एक मुखपत्र, *नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद*, साक्षरताकर्मियों के लिए *नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद* तथा बच्चों के लिए द्विभाषी पत्रिका, *पाठक मंच बुलेटिन* का भी मासिक प्रकाशन होता है।

23 अप्रैल पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 2003-04 की अवधि भारत के लिए गौरव का वर्ष था, क्योंकि 'यूनेस्को' और अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ ने दिल्ली को विश्व पुस्तक राजधानी से सम्मानित किया था। इस अवधि में देशभर में पुस्तक संबंधी अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया था।

नवसाक्षर साहित्यमाला

इस पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित अधिकांश पुस्तकें स्थानीय लोगों की भागीदारी से आयोजित कार्यशालाओं में तैयार की जाती हैं। लेखकों/विशेषज्ञों को भी पुस्तक लेखन का कार्य सौंपा जाता है तथा पुस्तकों का रूपांतरण एवं संक्षेपण भी कराया जाता है। पुस्तकों को नवसाक्षरों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए इन पुस्तकों को उनकी सुपरिचित भाषा-शैली में लिखा जाता है और नवसाक्षरों द्वारा पढ़वाकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता है। इन पुस्तकों में व्यापक चित्रांकन भी होता है।

कहानियाँ, जीवनचरित, उपन्यासिकाएँ, लोककथाएँ, समसामयिक विषय और व्यवहारोपयोगी सूचनाप्रद पुस्तकें ऐसी शैली में प्रकाशित की जाती हैं जो नवसाक्षरों को अपने आप पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

विषय-सूची

महिला सशक्तीकरण	5
एकता व सद्भाव	15
स्वास्थ्य	19
पर्यावरण	24
पशुपालन	26
लोक-साहित्य	26
कथा साहित्य	31
जीवनचरित	45
शिक्षापरक	47
हास्य-व्यंग्य	48
विविध (कानून/रोजगार, विज्ञान व अन्य)	49

* आदेश की आपूर्ति के समय पुस्तक का मूल्य परिवर्तित हो सकता है।

नवसाक्षर साहित्यमाला

महिला सशक्तीकरण

1. अंधेरा घर

पुदुवै चन्द्रहरि अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 24 ₹ 14.00

यह एक अशिक्षित माँ की कहानी है। वह हमेशा झगड़ती रहती है और अंततः मृत्यु को प्राप्त होती है। तमिल से हिंदी में अनूदित रचना। ISBN 978-81-237-3895-6

2. अपना मुकाम

मो. साजिद खान पृ. 12 ₹ 11.00

शमा के परिवार के दूसरे लोग शमा की शादी करना चाहते थे लेकिन शमा ने पढ़ाई कर टीचर की नौकरी कर ली। और अपना जीवन साथी भी तलाश लिया। पढ़ाई की महत्ता बताती यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-3851-2

3. आँसू का खारापन

चिनु मोदी अनु. : वर्षा दास पृ. 16 ₹ 11.00

केसरटी गाँव के किरपा पंडित ने अंबा सुथारिन की बेटी मंजू से दिल लगाया, पर उसकी माँ ने शादी कहीं और कर दी। वियोगी किरपा ने हनुमान की शरण ली लेकिन जब मंजू विधवा हुई तो वह हनुमानजी को छोड़कर कहीं चला गया। ISBN 81-237-2696-6

4. आँखें खुल गईं

कासी विल्लवन अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 12 ₹ 15.00

यह कहानी शराबी किलियन की है। उसकी देखादेखी उसकी पत्नी, बच्चे भी इस धंधे में आ जाते हैं और अपना सब कुछ तबाह कर बैठते हैं। ISBN 978-81-237-3726-3

5. आ गई दूसरी सिमरन

प्रेम गोरखी अनु. : फूलचंद मानव पृ. 18 ₹ 25.00

शिक्षा का महत्व समझाती एक रोचक पुस्तक। ISBN 978-81-237-6169-5

6. औरत जात

एस. साकी अनु. : मोना साकी पृ. 20 ₹ 9.00

स्त्री के चरित्र पर केंद्रित पंजाबी कथाकार की एक श्रेष्ठ रचना। ISBN 81-237-2683-4

7. उजाला

आशा दुबे पृ. 16 ₹ 12.00

नारी शिक्षा के महत्व को दर्शाती इस कहानी की नायिका कम उम्र में ही विधवा हो गई लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी और डाक्टर बनकर गाँव की सेवा में जुट गई। ISBN 978-81-237-1830-9

8. उजाले की राह

मो. साजिद खान पृ. 12 ₹ 11.00

कोई काम छोटा नहीं होता। हिम्मत कभी नहीं हारनी चाहिए। अहमद को जीने का मंत्र मिल गया, उसने काम शुरू कर दिया। ISBN 978-81-237-3797-3

9. इस हाथ दे, उस हाथ ले

आभा झा पृ. 16 ₹ 12.00

आज के जमाने में सबको बेटा चाहिए। पुस्तक बताती है बेटी भी परिवार के लिए बेहद जरूरी है। लाजो ने एक शर्त रख छोड़ी थी। वह शर्त क्या थी? जानने के लिए पुस्तक पढ़ें।

ISBN 978-81-237-4640-1

10. एक औरत एक जिंदगी

रामदरश मिश्र पृ. 20 ₹ 8.00

अकेली औरत पति की मृत्यु के बाद समाज से संघर्ष करती हुई अपना स्थान बनाती है। हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार की एक सशक्त कथा। ISBN 81-237-2602-3

11. एक थी लता

गार्गी चक्रवर्ती पृ. 36 ₹ 25.00

निम्न परिवार की लता द्वारा लापरवाह भाई के होते हुए माँ की चिता को अग्नि देने की कथा, जो मानवीय संवेदना को दर्शाती है। ISBN 978-81-237-1958-0

12. एक थी सुल्ताना

नासिरा शर्मा पृ. 24 ₹ 13.00

मुस्लिम लड़की भी तलाक ले सकती है। समाज में दोनों को बराबर का अधिकार है। कल्लू मियाँ की लड़की सुल्ताना ने भी अधिकार को समझा और दूसरी शादी के लिए हामी भर दी।

ISBN 978-81-237-4560-2

13. ऐसा क्यों

बालकृष्ण बोकील अनु. : वर्षा दास पृ. 14 ₹ 14.00

लड़के-लड़कियों में भेद करने की सामाजिक कुप्रथा पर चोट करती दस कविताओं का संग्रह।

ISBN 978-81-237-1233-8

14. ऐसे हुई सयानी लाली

दिनेश पुरोहित पृ. 40 ₹ 30.00

इस पुस्तक में दो कहानियाँ हैं। पहली कहानी में लाली नामक लड़की के सामाजिक संघर्ष का ब्योरा है। दूसरी कहानी में शहर में काम करने के बाद हमेशा के लिए वापस गाँव लौटने की कहानी है। ISBN 978-81-237-0580-4

15. कमला

अरविन्द मिश्र पृ. 16 ₹ 9.00

कमला ने गाँव की महिलाओं को एकत्र कर साक्षरता केंद्र की शुरुआत की। महिलाओं की एकता ने अपने मंडल को कैसे अपने प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ बना दिया, पढ़िए। ISBN 81-237-4771-3

16. कटे पंखों वाली परी

कुलदीप सिंह धीर पृ. 16 ₹ 20.00

युवावस्था में नेत्रहीनता का दंश झेलने वाली एक लड़की के हौसले की कहानी। विपरीत स्थितियों के बावजूद उसे नौकरी मिली और बाद में एक भले-चंगे युवक से शादी भी।

ISBN 978-81-237-5711-7

17. काली बनी महाकाली

रमाकांत 'कांत' पृ. 16 ₹ 15.00

प्रस्तुत कहानी राजस्थान की पृष्ठभूमि पर है। स्वाधीनता के वर्ष में कैसे एक आततायी अँग्रेज थानेदार से साधारण लड़की काली ने अपना बलिदान देकर गाँववालों को मुक्ति दिलाई, एक साहसपूर्ण कथा। ISBN 978-81-237-6176-3

18. किरन

राजेश शुक्ला पृ. 14 ₹ 15.00

यह कहानी एक ऐसी संवेदनशील किशोरी की है जो प्रकृति को प्रेम करने वाली है। प्रकृति के प्रति उसकी संवेदनशीलता को देखकर मैडम गाँव के लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करती हैं।

ISBN 978-81-237-5455-0

19. कोशी मेरी बेटी

आशा दुबे पृ. 16 ₹ 12.00

पिता के गुजर जाने के बाद कोशी ने हिम्मत नहीं हारी। उसने बचपन में मिट्टी के खिलौने बनाना सीखा था। बचपन का हुनर जीवन-यापन के काम आया। ISBN 978-81-237-4080-5

20. खेमी

रामनारायण पाठक 'द्विरेफ' अनु. : वर्षा दास पृ. 16 ₹ 12.00

गुजराती के प्रसिद्ध कथाकार 'द्विरेफ' द्वारा लिखी यह कहानी खेमी के अपने पति धनिया के प्रति अटूट प्यार पर केंद्रित है। ISBN 81-237-1249-9

21. खुले मुँह वाला

जसवीर भुल्लर अनु. : जसविंदर कौर बिंद्रा चित्र : अरूप दत्ता

पृ. 26 ₹ 17.00

यह कहानी दहेज की समस्या पर आधारित है कि कैसे एक परिवार ने अपनी लड़की को दहेज के चंगुल से बचाया। मास्टर सुच्चा सिंह का विचार था कि वह अपनी बेटी की शादी उस घर में करेंगे जहाँ दहेज के लिए कोई माँग न हो, बल्कि घर आए-गए अतिथि का सम्मान भी हो। भीतर तक हिला देने वाली एक मर्मस्पर्शी कहानी। ISBN 978-81-237-6927-1

22. गाँव की बेटी

संदीप सृजन पृ. 16 ₹11.00

संपत नगर गाँव के जमींदार अपनी बहुओं से केवल पुत्रों की आशा करते थे, पुत्रियों की नहीं। तो भी, एक बहू की जब बेटी हुई तो बड़ी होकर वह डॉक्टर बन गई। जमींदार को अपनी भूल पर पछतावा हुआ।

ISBN 978-81-237-6630-0

23. गुंजा की नैनी

कासिम खुर्शीद पृ. 16 ₹ 9.00

प्रस्तुत कहानी जागरूक किसान दंपती के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों को केंद्र में रखकर लिखी गई है।

ISBN 978-81-237-5490-1

24. गुड्डी

मुकेश पचौरी पृ. 20 ₹ 16.00

यह पुस्तक किशोरी के मनोविज्ञान पर केंद्रित है। माँ-बाप को चाहिए कि वे कुछ पल अपने बच्चों के साथ बिताएँ और उनकी भावना को समझें।

ISBN 978-81-237-5194-8

25. गुलकी बन्नो

धर्मवीर भारती रूपां. : कन्हैयालाल नंदन पृ. 32 ₹ 9.00

गुलकी बन्नो एक सब्जी वाली कुबड़ी है, जिसे उसके आदमी ने छोड़ दिया। बच्चे उसे सताते हैं पर वह बुरा नहीं मानती। आखिर एक दिन गुलकी अपने आदमी के साथ चली गई।

ISBN 978-81-237-3413-2

26. गुलाबा

नलिनी श्रीवास्तव पृ. 15 ₹ 15.00

यह कहानी गुलाबा जैसी कर्मठ और लगन की पक्की महिला के संघर्ष की गाथा है। गुलाबा अपनी मेहनत और लगन से अपने पुत्र खेमलाल को पढ़ा लिखाकर एक बड़ा अफसर बनाती है।

ISBN 978-81-237-5094-1

27. घर लौट चलो

मीनाक्षी स्वामी पृ. 12 ₹ 16.00

संतान न होने के लिए पुरुष व महिला दोनों उत्तरदायी हैं। मात्र महिला को दोषी ठहराने को अनुचित बताती कहानी।

ISBN 81-237-1835-4

28. चतुर लड़की

चित्रा नाईक पृ. 8 ₹ 13.00

इस पुस्तक में एक ऐसी बुद्धिमान लड़की की कथा है जिसने अपने किसान पिता को धूर्त साहूकार के चंगुल से बचाया।

ISBN 81-237-0035-0

29. चंपा

लक्ष्मी कन्नन पृ. 16 ₹ 13.00

यह कहानी औरत के जीवट की है। चंपा का पति शराब पीकर मर गया। कैसे और किन हालात में चंपा ने घर को संभाला? किन कारणों से चंपा को गाँव में मान मिला, बताती है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-3511-5

30. जलने से बचाव

कल्पना सूद लाल अनु. और रूपां. : पंकज चतुर्वेदी पृ. 46 ₹ 40.00

'जलने का इलाज करने से बेहतर है कि उससे बचाव करें'—यह संदेश देती इस पुस्तक में बताया गया है कि किस तरह मामूली-सी लापरवाही आग की भयंकर घटना का कारण बन जाती है। थोड़ी सी सावधानी व्यक्ति को बहुत बड़ी दिक्कतों से बचा सकती है।

ISBN 978-81-237-4999-0

31. जैसा बोओगे

सु. समुत्तिरम अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 16 ₹ 11.00

यह ससुर और बहू केंद्रित एक बेहतरीन रचना है। अगर बहू अपने ससुर को पिता का दर्जा दे तो बुजुर्ग पीढ़ी हमेशा आशीष ही देंगी। तमिल की एक आदर्श रचना।

ISBN 978-81-237-3793-5

32. ठगिनी

सुबोध घोष अनु. : देवलीना पृ. 32 ₹ 11.00

एक बाप-बेटी हमेशा भोले-भाले लोगों को शादी का झांसा देकर माल हड़प कर जाते थे। आखिर एक दिन बेटी ही बाप को ठगकर अपने दूल्हे के साथ हमेशा के लिए घर छोड़ गई।

ISBN 81-237-2732-1

33. तपोवन का राजा

प्रेम सिंह नेगी पृ. 16 ₹ 17.00

यह कहानी बड़ी रोचक है। यह बताती है कि हर अच्छी या बुरी बात के पीछे कसूरवार आदमी ही है।

ISBN 978-81-237-3510-8

34. तारा

रचना सिद्धा पृ. 20 ₹ 14.00

किशोरवय तारा की कच्ची उम्र में ही शादी हो गई और बच्चे भी। लड़कियों के जन्म का भी उसे ही अपराधी माना गया। ननद और सहेली की मदद से उसकी जिंदगी में फिर से उजाला आता है और वह साक्षर होकर आर्थिक रूप से भी सक्षम हो जाती है। परिवार उसे पुनः अपना लेता है, प्यार और सम्मान देता है। प्रेरक कहानी।

ISBN 978-81-237-6926-4

35. देवपुर की बुआ

वीरेन्द्र तंवर पृ. 20 ₹ 13.00

लीला दाई ने सरपंच पद जीत कर पुराने सरपंच को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। बताती है यह सरल रचना।

ISBN 978-81-237-3765-2

36. देर है अंधेर नहीं

वीरेन्द्र तंवर पृ. 12 ₹ 11.00

अपने आदमी के शक का शिकार हुई कला ने आत्महत्या क्यों की? उसके पति की गिरफ्तारी और थानेदार की नौकरी क्यों गई? पढ़िए मानवाधिकार पर केंद्रित एक असरदार रचना।

ISBN 978-81-237-2750-9

37. दुमेला की विमला

माल चंद तिवाड़ी पृ. 16 ₹ 11.00

यह कहानी महिलाओं के स्वाभिमान का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है। 12वीं पास विमला ने पूर्व सरपंच की तरकीब को कामयाब नहीं होने दिया। ISBN 978-81-237-5470-3

38. नतमस्तक

वंदना पुष्पेंद्र पृ. 14 ₹ 18.00

कमलेश नाम की एक विधवा स्त्री ने कैसे अपने दो-दो बच्चों को पाला-पोसा, स्वयं भी साक्षर होते हुए बच्चों को भी शिक्षित किया—एक प्रेरणाप्रद संघर्ष गाथा।

ISBN 978-81-237-6270-8

39. नया सवेरा

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' पृ. 24 ₹ 25.00

ज्यादा बड़ा परिवार हो तो अलग तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। छोटे परिवार का संदेश जब डाक्टरनी ने दिया तो दादी भी मान गई। ISBN 81-237-4677-6

40. पंछीपुर की परमेसरी

प्रदीप पंत पृ. 20 ₹ 13.00

पंछीपुर गाँव की परमेसरी सरपंच चुने जाने पर कैसे अपने गाँव में सफाई, पर्यावरण और नशामुक्ति के लिए लोगों को प्रेरित करती है—एक संदेशपरक कहानी।

ISBN 978-81-237-6632-4

41. पराया धन

जनार्दन मिश्र पृ. 20 ₹ 18.00

माँ द्वारा पढ़ाई का विरोध किए जाने पर भी लड़की अपने मामा-मामी के यहाँ पढ़कर डॉक्टर बन जाती है और माँ का इलाज भी करती है। तब माँ को अहसास होता है कि बेटियाँ पराया धन नहीं होतीं और उन्हें भी पढ़ाना जरूरी है। ISBN 978-81-237-6104-6

42. पापड़ बड़ी बनाएँ

प्रज्ञा बाछोतिया पृ. 16 ₹ 11.00

महिलाएँ खाली समय का सदुपयोग कर आर्थिक दृष्टि से संपन्न हो सकती हैं। वे कैसे लघु कुटीर उद्योग की शुरुआत कर सकती हैं, सरल भाषा में बताती है पुस्तक।

ISBN 81-237-5199-3

43. पूछेरी

मनोहर चमोली 'मनु' पृ. 16 ₹ 11.00

यह कहानी एक अनाथ किंतु जागरूक एवं साहसी लड़की पर केंद्रित है। उसकी दिलेरी को देखकर गाँव के मुखिया ने उसे अनाथ नहीं बल्कि पूरे गाँव की बेटी कहकर संबोधित किया।

ISBN 978-81-237-5498-7

44. पिंडदान

ज्योत्स्ना मिलन पृ. 16 ₹ 20.00

विवाह के बाद कोई जात-पांत नहीं रहती। ऐसा काका ने बुआ को समझाया। बात बुआ ने समझ ली और बहू को रसोई में काम करने दिया। ISBN 978-81-237-3430-6

45. प्रेम का सार

यशपाल रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 20 ₹ 10.00

एक पत्नी के प्यार और त्याग को दर्शाती हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार यशपाल की कहानी का रूपांतरण।

ISBN 81-237-0898-X

46. बड़ी हो रही है लड़की

रघुवीर सहाय पृ. 16 ₹ 10.00

लड़की किन परिस्थितियों में कैसे और किस तरह अपना विकास करती है। ऐसे ही सतरंगी रंगों को इस किताब में समेटा गया है। ISBN 978-81-237-3114-8

47. बहादुर दीदी

गार्गी चक्रवर्ती पृ. 16 ₹ 16.00

एक माली की लड़की आशा जब ससुराल गई तो सास-ससुर और पति ने दहेज के लिए खूब सताया। उसने अपनी बेबसी की चिट्ठी घर लिख भेजी। पढ़ी-लिखी बहन ने शिकायत कर सबको हवालात में बंद करवाया। अपने अधिकारों की रक्षा पर केंद्रित पुस्तक बेहद उपयोगी है।

ISBN 978-81-237-3470-5

48. बुधिया का सपना

सतीश उपाध्याय पृ. 20 ₹ 17.00

स्त्री के जीवट पर केंद्रित कहानी। कैसे बुधिया पर जुल्म हुआ लेकिन उसने हार नहीं मानी। थाने जाकर शिकायत कर न्याय की हकदार बनी बुधिया। ISBN 978-81-237-4759-0

49. बंसीधर अब तू किधर जाएगा रे?

श्री म. माटे अनु. : लछमन हर्दवाणी पृ. 20 ₹ 18.00

मराठी से अनूदित हिंदी रचना। ISBN 81-237-3768-8

50. भगत की सीख

बलदेव साव पृ. 16 ₹ 11.00

भाई-भाई का झगड़ा किस घर में नहीं होता? पिता की बात नहीं मानी तो घर बिखर गया।

ISBN 81-237-3925-7

51. भले घर का लड़का

सतीश जायसवाल पृ. 16 ₹ 7.00

यह कहानी घर से भाग आए लड़के की है जो बाद में बड़ा पछताता है। वरिष्ठ लेखक की एक श्रेष्ठ रचना। ISBN 81-237-3894-3

52. भानसोज की चैती

गिरीश पंकज पृ. 16 ₹ 11.00

गाँव में शराबबंदी के लिए महिलाओं द्वारा एकत्र होकर किए गए संघर्ष की कहानी।

ISBN 81-237-1781-4

53. भाभी बनी सरपंच

वीरेन्द्र तंवर पृ. 16 ₹ 16.00

अनपढ़ भाभी कैसे गाँव की सरपंच बनी? किस तरह गाँव के मुखिया जालिम सिंह की जमानत जब्त हुई? गाँव के विकास पर केंद्रित यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-3482-8

54. भूल

जैबुन्निसा 'हया' पृ. 16 ₹ 14.00

प्रस्तुत कहानी 'भूल' एक अपाहिज किंतु स्वाभिमानी लड़की रेवती पर केंद्रित है। लेखिका ने रेवती के माध्यम से समाज और परिवार में उपेक्षित विकलांगों के अदम्य साहस और उनके जन्मजात गुणों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। SBN 978-81-237-5526-7

55. भूल का शूल

शारदा कुमारी पृ. 16 ₹ 10.00

कहानी सिखाती है कि कभी भी दूसरे व्यक्ति पर आरोप बिना देखे नहीं लगाना चाहिए। एड्स जैसी बीमारी कई कारणों से हो सकती है जिसका समय रहते इलाज किया जा सकता है।

ISBN 81-237-3432-8

56. मतदाता सावित्रीबाला

बनफूल पृ. 12 ₹ 11.00

प्रस्तुत कहानी में संघर्ष से जूझती एक गरीब माँ का चित्रण है, जिसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। ISBN 81-237-2100-5

57. मिट्टी का आदमी

वासिरेड्डी सीता देवी अनु. : जे. एल. रेड्डी पृ. 32 ₹ 16.00

अपनी गलतियों के कारण वरूथिनी ने अपना घर, परिवार, धन-दौलत, मान-मर्यादा को कैसे खो दिया? यही बताती है तेलुगु से हिंदी में अनूदित यह रचना। ISBN 978-81-237-3896-3

58. मेरा भाई है...

सनत कुमार भट्ट रूपां. एवं अनु. : वर्षा दास पृ. 12 ₹ 8.00

नवसाक्षरों के लिए पहले प्राइमर के साथ पढ़ी जा सके ऐसी पुस्तिका का मूल गुजराती से हिंदी में किया गया एक अनूठा प्रयास। ISBN 81-237-2931-8

59. महिला पढ़-लिख ले तो?

रूपां. : वर्षा दास पृ. 12 ₹ 18.00

महिलाएँ अगर साक्षर हो जाएँ तो उन्हें तथा उनके परिवार को क्या क्या लाभ हो सकते हैं, इसकी जानकारी देने वाली पुस्तक। ISBN 978-81-237-0767-9

60. मैना दीदी की कहानियाँ

जयंत कुमार त्रिभुवन पृ. 36 ₹ 25.00

इस पुस्तक में दो कहानियाँ संकलित हैं। दोनों ही कहानियों में नारी द्वारा अपने अधिकारों की पहचान और उनके लिए लड़ने का वर्णन है। ISBN 81-237-0192-6

61. मुक्ति के लिए

जगवीर सिंह वर्मा पृ. 20 ₹ 11.00

पति की मौत के बाद सिरदारी तेरहवें दिन ही काम की तलाश में निकल पड़ती है। अकेली औरत के जूझने की एक सशक्त रचना। ISBN 978-81-237-2342-6

62. मुलाणा का बकस

व्यंकटेश माडगुलकर अनु. : हेमा जावडेकर पृ. 16 ₹ 7.00

दिमागी हालत से कमजोर मेहनती बकस सारा दिन बकरियाँ चराता है। चाची की जली-कटी सहता है। समाज में फैले शोषण पर केंद्रित मराठी की एक मर्मस्पर्शी रचना। ISBN 81-237-3070-5

63. यह जवाबदारी किसकी

बालकृष्ण बोकील पृ. 32 ₹ 20.00

विवाह के बाद अपने गाँव लौटकर एक लड़की विभिन्न परिवारों के बड़े-बूढ़ों की एक बैठक बुलाती है और उन्हें इस बात के लिए दोषी ठहराती है कि उन्होंने उसे अनपढ़ रखा। सब अपनी भूल स्वीकार कर बदलाव लाने का निर्णय लेते हैं। ISBN 978-81-237-0185-1

64. रतनपाल का सपना

हरनेक सिंह कलेर पृ. 20 ₹ 14.00

रतनपाल के जीवट की कथा। कैसे उसने संघर्ष कर अपने को पथ से डिगने नहीं दिया; बच्चों की पाठशाला से जुड़कर उन्हें आगे बढ़ने का संस्कार दिया। ISBN 978-81-237-5900-5

65. रामो चंडी

चंदन नेगी अनु. : सुभाष नीरव पृ. 18 ₹ 12.00

पंजाबी लेखिका की एक मार्मिक रचना। एक ही मुहल्ले में एक ही नाम की पाँच औरतें रहती हैं। ऐसे में रामो चंडी को जानना बेहद जरूरी हो जाता है। ISBN 81-237-4676-8

66. रोशनी की माँ

रमेश तैलंग पृ. 16 ₹ 15.00

रोशनी की माँ वयस्क होने पर स्कूल जाना शुरू करती है। उसने अक्षर सीखे। वोट देना सीखा। कमाना भी शुरू कर दिया और बचत भी। वह बेटी को भी पढ़ाएगी, तब शादी करेगी, ऐसा उसने ठाना। अब उसकी जिंदगी बदल गई। सच है, पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती। ISBN 978-81-237-7091-8

67. लखमी

धूमकेतु अनु. : गीता जैन; रूपां. : चंद्रकांत सेठ पृ. 20 ₹ 12.00

गृहस्थी में बचत के महत्व को दर्शाती कहानी। ISBN 978-81-237-1575-9

68. लाली

बलदेव सिंह 'बद्दन' पृ. 12 ₹ 11.00

बिमला और हरखू को अपने दोनों बच्चों से बड़ा लगाव था। जब लाली की शहर में नौकरी लगने की खबर आई तो बिमला की खुशी देखते ही बनती थी। ISBN 978-81-237-4717-4

69. वसीयत

अनसूया अग्रवाल पृ. 18 ₹ 11.00

यह कहानी अविवाहित स्त्रियों पर केंद्रित है। कहानी हमें बताती है किस प्रकार पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और स्वार्थी लोगों से धोखा खाई ये महिलाएँ अपने पैरों पर खड़ी होकर स्वाभिमान से जीती हैं। ISBN 978-81-237-5456-7

70. सच्ची खुशी

अमर गोस्वामी पृ. 12 ₹ 12.00

दामोदर पांडे ने अपनी समाज सेवा के साथ अपनी माँ के छुआछूत के भेदभाव को बिलकुल मिटा दिया। वरिष्ठ कथाकार की एक आदर्श रचना। ISBN 978-81-237-3909-5

71. सरला ने कहा

जमुना प्रसाद कसार पृ. 16 ₹ 12.00

सरला पढ़-लिखकर समझदार हो गई तो उसके माँ-बाप को बड़ी खुशी हुई। छत्तीसगढ़ के वयोवृद्ध रचनाकार की एक महत्वपूर्ण रचना। ISBN 978-81-237-3863-5

72. सुजाता की सास

शिव मृदुल पृ. 12 ₹ 12.00

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया है। सुजाता की सास लड़के और लड़की में कोई भेद नहीं रखती है। सास के इस उदारवादी और ममतामयी व्यवहार से सुजाता की सास के प्रति पूर्व में बनाई गई गलत धारणाएँ टूट गईं। ISBN 978-81-237-5559-5

73. साँवरी

अनीता चौधरी पृ. 16 ₹ 18.00

गौरी और सांवरी जमींदार की दो बेटियाँ हैं जो अपने नाम के अनुरूप ही गोरी और सांवली है। सांवरी अच्छी शक्ल-सूरत की न होकर भी दिल से अच्छी थी। उसने गौरी सहित पूरे परिवार का हृदय परिवर्तन कर दिया। ISBN 978-81-237-6175-6

74. सागर

वर्षा दास पृ. 16 ₹ 13.00

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक, जिसमें एक भी संयुक्ताक्षर नहीं है। इसका उपयोग साक्षरता के पहले प्राइमर के साथ किया जा सकता है। ISBN 978-81-237-2771-4

75. हम होंगे कामयाब एक दिन

ललित किशोर मंडोरा चित्र : अतुल वर्धन पृ. 12 ₹ 12.00

यह पुस्तक महिला सशक्तीकरण पर केंद्रित है। किस प्रकार ममता ने अपने नशेड़ी पति की मौत के बाद बिखरते परिवार को संभाला। पुस्तक बताती है कि कोई भी नशा अच्छा नहीं होता। इससे बचना चाहिए। ISBN 978-81-237-6921-9

एकता व सद्भाव

1. अमरु की कहानी

गुरमेल मडाहड़ पृ. 16 ₹ 13.00

अमरु नामक लड़के ने कैसे अपनी लगन एवं मेहनत से अपने व अपने परिवार का जीवन खुशहाल बनाया, इसकी कहानी है इस पुस्तक में। एक प्रेरक रचना।

ISBN 978-81-237-5712-4

2. इनसान की पहचान

गिरीश पंकज पृ. 16 ₹ 16.00

यह कहानी सेजपुर गाँव के दो किसानों की है। एक गरीब है और दूसरा अमीर। कैसे अमीर किसान का हृदय परिवर्तन हुआ? बताती है यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-3481-1

3. एक गाँव जगतपुर

कृष्ण कुमार पृ. 14 ₹ 12.00

यह कहानी बताती है कि गाँव में नारी शिक्षा में अगर महिलाओं को जोड़ दिया जाए तो सचमुच एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया जा सकता है। यह परिवर्तन जगतपुर में भी हुआ।

ISBN 81-237-4595-8

4. एक ही धारा

बटरोही पृ. 24 ₹ 25.00

प्रस्तुत पुस्तक में गाँव में व्याप्त ऊँच-नीच की कुरीति पर सटीक प्रहार किया गया है।

ISBN 81-237-0011-3

5. एकता का पुल

मोहम्मद अलीम पृ. 16 ₹ 15.00

गाँव की हर जाति व धर्म के लोगों को शोषण के विरुद्ध उठकर कार्यवाही करने की प्रेरणा देने वाली कहानी। ISBN 978-81-237-0590-3

6. केसर की महक

बचिंत कौर पृ. 16 ₹ 25.00

अपना बच्चा न होने की स्थिति में एक ग्रामीण दंपती शहर जाकर अनाथालय से एक बच्चा गोद ले लेता है जिससे घर भर में खुशी तैर जाती है। ISBN 978-81-237-5710-0

7. गुल्लू

नासिरा शर्मा पृ. 12 ₹ 8.00

कैसे गुल्लू अपनी अच्छाई से कुछ शरारती बच्चों के आचरण को बदल देता है। गुल्लू की मासूमियत पूरी कहानी का मूल केंद्र है।

ISBN 81-237-4286-1

8. चंदर का सुख

सीतेश आलोक पृ. 16 ₹ 14.00

वरिष्ठ लेखक की सरस कहानी जो बतलाती है कि कभी भी हमें किसी को दुःख नहीं पहुँचाना चाहिए।

ISBN 978-81-237-4789-7

9. जैसे सबके दिन फिरे

श्याम सुंदर त्रिपाठी पृ. 24 ₹ 13.00

'अन्न कोठी' की महत्ता बताती छत्तीसगढ़ के लेखक की एक रोचक कहानी।

ISBN 978-81-237-3746-1

10. झुमनी आपा का गाँव

रचना सिद्धा पृ. 16 ₹ 9.00

सभी लोग बराबर हैं। कौन छोटा, कौन बड़ा? एक झुमनी आपा ही थी जिसने नफरत की हवा को रोकने का बीड़ा उठाया। गाँव में एक मिसाल कायम कर गई झुमनी आपा।

ISBN 81-237-4625-3

11. झोपड़ी का लट्टू

शीतल 'नवीन' शीघ्र प्रकाश्य

प्रस्तुत कहानी में ऐसे बच्चों का जीवंत चित्रण किया गया है, जो अभावों में रहकर भी जीवन को एक उत्सव के रूप में जीते हैं। कहानी बताती है कि किस प्रकार बाल-सुलभ जिज्ञासाओं से परिपूर्ण ये बच्चे अपनी माँ से ऐसे कितने ही प्रश्न करते हैं जो वर्तमान समाज की वास्तविक स्थिति पर कटाक्ष करते हैं।

12. दयाबाई

शरद सिंह पृ. 14 ₹ 11.00

महिलाएँ भी परिवार का पालन-पोषण कर सकती हैं, अपने पति का सहयोग भी कर सकती हैं—यही इस कहानी में बताया गया है।

ISBN 978-81-237-4664-7

13. दयाल

आबासाहब वाघमारे अनु. : लछमन हर्दवाणी पृ. 32 ₹ 15.00

यह कहानी एक दयालु आदमी की है जो हमेशा सबके सुख-दुख में आगे रहता है। युवा शक्ति और जनचेतना को जगाने की इसकी एक मिसाल थी। ISBN 978-81-237-3477-4

14. दोस्ती के रंग पृ. 16 ₹ 14.00

अंजली

प्रस्तुत कहानी रिक्शावाले बन्ने और स्कूल में पढ़ने वाले मोनू पर केंद्रित है। कहानी बन्ने और मोनू की दोस्ती के विभिन्न रंगों से सजी है। ISBN 978-81-237-7184-7

15. धरती निचला बैल

कुलवंत सिंह विर्क अनु. : सुभाष नीरव पृ. 24 ₹ 11.00

करमसिंह और मानसिंह पक्के दोस्त थे। अपनी छुट्टी काटकर मानसिंह करमसिंह के गाँव पहुँचा तो अंत तक बापू ने उसकी मौत की खबर मानसिंह से छिपाए रखी। जब बात खुली तो दोनों फूट-फूटकर रो पड़े। पंजाबी कथाकार की बेहद मार्मिक रचना। ISBN 978-81-237-2731-2

16. नाम वाले चाचा

आशीष दत्त पृ. 20 ₹ 12.00

एक अत्यंत रोचक कहानी, जिसे पढ़ना आपको रुचेगा। ISBN 81-237-6651-5

17. नीम की बेटी

मो. अरशद खान पृ. 20 ₹ 20.00

हाजी रहमत अली अपने गाँव में 'पंडित जी' और 'हाजी साहब' दोनों कहलाते थे। अपने घर के आगे नीम के पेड़ को कटने से बचाने के लिए वे किस हद तक जेहादी हो जाते हैं यह पढ़ना अत्यंत प्रेरक है। ISBN 978-81-237-6509-9

18. पहले आप

इब्ने कंवल अनु. : उमा बंसल पृ. 16 ₹ 11.00

एक-दूसरे को बेहद प्यार करने वाले पति-पत्नी की रोचक कहानी, जो मौत के फरिश्ते को सामने पाकर अपने से पहले अपने साथी की मौत चाहते हैं। ISBN 978-81-237-5612-7

19. पारसमणि

ईश्वर पेटलीकर अनु. एवं रूपां. : वर्षा दास पृ. 20 ₹ 13.00

प्रस्तुत पुस्तक समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊँच-नीच को समाप्त करने की प्रेरणा देती है। ISBN 81-237-1531-5

20. बहादुर बच्चे

सिगरुन श्रीवास्तव पृ. 20 ₹ 25.00

बच्चों की बहादुरी के किस्से रोचक भाषा में लेखिका ने लिखे हैं। ISBN 81-237-2450-0

21. भाई

सुनीता कावले अनु. : लछमन हर्दवाणी पृ. 30 ₹ 15.00

कुष्ठ रोग कोई भयावह बीमारी नहीं है। जब गाँववालों को यह पता चला तो उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ। उपचार के बाद राम की दुकान में फिर से चहल-पहल शुरू हो गई। हर बीमारी का इलाज है, बशर्ते आप शुरू से ध्यान दें। ISBN 978-81-237-3349-4

22. भोला किसान

सु. पलनी सामी अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 12 ₹ 11.00

यह एक भोले किसान शंकर और धूर्त पंडित की कहानी है। तमिल से हिंदी में अनूदित रचना।

ISBN 978-81-237-3711-9

23. मिनीमाता

परदेशीराम वर्मा पृ. 20 ₹ 12.00

मिनीमाता छत्तीसगढ़ की प्राण थी। कैसे वह सांसद पद तक पहुँची। इस रोचक सफर को जानना सुखद लगेगा।

ISBN 81-237-3741-6

24. लालटेन

मधुकर सिंह पृ. 20 ₹ 12.00

वरिष्ठ रचनाकार की जन-जागृति को आंदोलित करती बेहद मर्मस्पर्शी रचना।

ISBN 978-81-237-2775-2

25. विघन की जड़

भरत ओला पृ. 12 ₹ 12.00

यह कहानी फत्तू खां और जीत सिंह के रिश्तों पर केंद्रित है। किस बात पर उनकी तकरार का अंत हुआ। रोचक कहानी।

ISBN 978-81-237-4858-0

26. साथी हाथ बढ़ाना

लक्ष्मी कन्नन पृ. 16 ₹ 17.00

कहानी बताती है कि भले हम कितने ही आधुनिक हो जाएँ पर घर की रीढ़ हमारे माता-पिता हैं, जिनके आशीर्वाद से घर में बरक्कत और खुशियाँ बनी रहती हैं।

ISBN 978-81-237-3518-4

27. सहारा एक दूजे का

अशोक लाल पृ. 16 ₹ 9.00

कहानी बताती है कि पैसा, नकदी चाहे कुछ भी हो इससे कुछ दिन तो आदमी को राहत मिलती है, लेकिन सारी जिंदगी नहीं काटी जा सकती।

ISBN 81-237-3431-X

28. सुख के आँसू

देवेन्द्र सिंह पृ. 16 ₹ 11.00

प्रस्तुत कहानी दो दोस्तों–धनसिंह और गोपाल की दोस्ती का बड़ा मार्मिक वर्णन करती है।

ISBN 978-81-237-5473-4

29. हम सब एक हैं

फारूख आफरीदी पृ. 12 ₹ 14.00

आपसी भाईचारे पर केंद्रित कहानी में यह बताया गया है कि सबसे बड़ा धर्म इंसानियत का धर्म है। खुदा की नजर में हम सब एक हैं।

ISBN 978-81-237-6550-1

30. हरदीप और उसकी अंधविश्वासी माँ

भगवंत रसूलपुरी पृ. 20 ₹ 19.00

अंधविश्वास या जादू-टोने से बच्चे नहीं होते; वैज्ञानिक सोच को केंद्र में रखकर लिखी गई रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-6163-3

स्वास्थ्य

1. अपंगता से मुकाबला

विनोद कुमार मिश्र पृ. 16 ₹ 12.00

विज्ञान के इस युग में ऐसी कोई बीमारी नहीं जिसका इलाज न हो। लोगों को भी चाहिए कि ऐसी स्थिति ही न उपजे कि उन्हें बेबस होना पड़े।

ISBN 81-237-3069-1

2. आँखों की देखभाल—नजर का बचाव

उदय चंद्र गुप्ता पृ. 28 ₹ 17.00

आँखों का विकार, देखने में परेशानी तथा आँखों के अन्य रोग और उनके उपचार का ब्योरा।

ISBN 978-81-237-1041-9

3. आशा की किरण

विनोद कुमार मिश्र पृ. 20 ₹ 19.00

दिमागी तौर पर कमजोर बच्चों को नई रोशनी देती यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-4002-7

4. ऐसा ही होगा

निशात फातमा पृ. 12 ₹ 11.00

यह कहानी गुटखा, तम्बाकू और अन्य नशीले सेवन की चीजों के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणामों का जिक्र करते हुए उनके सेवन पर रोक लगाने को जागरूक करती है।

ISBN 978-81-237-5106-1

5. कमली का दुश्मन

पुष्पा सक्सेना पृ. 16 ₹ 11.00

स्त्रियों के स्वास्थ्य पर केंद्रित यह कहानी मूलतः महिलाओं में खून की कमी से होने वाली बीमारियों और उसके निवारण के बारे में जानकारी देती है।

ISBN 978-81-237-5696-7

6. कमर का दर्द

जितेन्द्र माहेश्वरी पृ. 24 ₹ 9.00

आज के व्यस्त जीवन में आदमी को कई बार झुकना पड़ता है। काम करना पड़ता है। नतीजतन कमर में दर्द शुरू हो जाता है। पुस्तक सरल भाषा में बताती है कि कमर के दर्द से कैसे छुटकारा पाएँ।

ISBN 81-237-2125-0

7. कुशल माली

मेनका श्रीवास्तव पृ. 16 ₹ 11.00

कुष्ठ कोई भयंकर रोग नहीं है। समय रहते इससे बचा जा सकता है। हरखू ने भी यही किया। कलेक्टर ने जब 'कुशल माली' का पुरस्कार दिया तो पूरा परिवार खुशी से झूम उठा।

ISBN 978-81-237-4612-8

8. खैनी एक जहर

ओंकार शर्मा 'निराला' पृ. 12 ₹ 16.00

जान है तो जहान है। नशा कभी भी सगा नहीं होता। यह अपने को आप से और परिवार से दूर कर देता है। इससे बचना पूरे परिवार की खुशहाली के लिए बहुत जरूरी है। ISBN 81-237-4197-0

9. गाँव का बेटा

राकेश चक्र पृ. 20 ₹ 13.00

किशन डॉक्टर बनकर भी शहर नहीं जाता। अपने गाँव में रहकर गाँववासियों में स्वास्थ्य की चेतना जगाता है। ISBN 978-81-237-6627-0

10. गुटखाराम

गिरीश पंकज पृ. 16 ₹ 11. 00

गुटखा, खैनी यह सब सेहत के साथ खिलवाड़ करते हैं और कई बार भयंकर रोग भी देकर जीवन लीला समाप्त कर जाते हैं। सरल भाषा में बताती है यह कहानी। ISBN 978-81-237-6690-4

11. जब फुलवा हँसी

प्रभा सरस पृ. 16 ₹ 11.00

यह कटे-फटे होंठों को ठीक कर देने वाली एक रोचक कहानी है। कैसे फुलवा का जीवन बिलकुल बदल गया। बताती है यह कहानी। ISBN 81-237-3743-7

12. जब मन में उठे बच्चे की चाह

यतीश अग्रवाल पृ. 18 ₹ 19.00

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने गर्भस्थ महिलाओं के गर्भ धारण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना है इस बात की बड़ी ही महत्वपूर्ण जानकारी दी है। ISBN 978-81-237-6012-4

13. तंबाकू से कैसे बचें?

पीयूष जैन पृ. 20 ₹ 7.00

कोई भी नशा हो, उसका परिणाम हमेशा भयंकर होता है। वरिष्ठ डॉक्टर द्वारा लिखी गई एक महत्वपूर्ण रचना। ISBN 978-81-237-4067-0

14. तुरंत उपचार

यतीश अग्रवाल पृ. 40 ₹ 16.00

आम जीवन में कोई न कोई दुर्घटना घटती ही रहती है। ऐसे में 'तुरंत उपचार' की आवश्यकता महसूस होती है। इस विषय को बखूबी बताती है यह उपयोगी पुस्तक।

ISBN 81-237-2114-5

15. नई रोशनी

प्रभा सरस पृ. 18 ₹ 14.00

इस कहानी से कुष्ठ रोगियों में जागरूकता और जिंदगी के प्रति सकारात्मक नजरिया पैदा होता है।

ISBN 978-81-237-5472-7

16. निश्चय

अरविन्द सिंह आशिया पृ. 14 ₹ 16.00

प्रस्तुत कहानी पूर्णतः महिलाओं के स्वास्थ्य पर केंद्रित है। किशोरावस्था में मासिक धर्म के बारे में पूर्ण जानकारी न होने के कारण उत्पन्न परेशानियों को सरल रूप में बताया गया है।

ISBN 978-81-237-5469-7

17. पागल मौत कहें या रेबीज़

उदयवीर सिंह राणा पृ. 32 ₹ 25.00

रेबीज़ जैसे भयानक रोग के विषय में पूर्ण एवं लाभदायक जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। रेबीज़ से बचने के लिए कुत्ते, बिल्ली, बंदर आदि जानवरों के काटने पर तुरंत उपचार किए जाने पर बल दिया गया है। ISBN 978-81-237-0851-5

18. पुरवा व पछुआ की मधु और राधा

रश्मि बड़थ्वाल पृ. 12 ₹ 14.00

पुरवा गाँव की मधु और पछुआ गाँव की राधा ने अपने-अपने गाँव में स्वास्थ्य और साफ-सफाई के संबंध में जागरूकता पैदा कर गाँववालों में चेतना जगाई। ISBN 978-81-237-6263-0

19. पूरियों की सुगंध

रमाशंकर श्रीवास्तव पृ. 24 ₹ 20.00

यह कहानी खाने के शौकीन नरेश के इर्द-गिर्द घूमती है। अधिक खाना खाने से उसके पाचन तंत्र में खराबी आ गई। अंत में उसने अपनी इस बुरी आदत को छोड़ने का संकल्प किया।

ISBN 978-81-237-5497-0

20. बड़े दिलवाला

डॉ. हरप्रीत सिंह पृ. 28 ₹ 15.00

दिल की बीमारी किसी को भी हो सकती है। आज जरूरत है कि आप अपनी सेहत का किस प्रकार ख्याल रखते हैं। प्रमुख चिकित्सक द्वारा सरल भाषा में बताती यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक।

ISBN 978-81-237-5153-5

21. बात आँख की

श्रीनिवास जोशी पृ. 16 ₹ 12.00

आँख के बिना संसार अधूरा है। इसकी सुरक्षा कैसे करें? जानकारी देती है वरिष्ठ लेखक की यह उपयोगी पुस्तक। ISBN 81-237-2460-8

22. बात कान की

श्रीनिवास जोशी पृ. 16 ₹ 11.00

कान हमारे शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। इसकी देखभाल कैसे की जाए? सरल भाषा में बताती है यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-2451-5

23. बात शादी की

श्रीमती एन. विजयलक्ष्मी पृ. 16 ₹ 12.00

पुस्तक बताती है कि शादी की सही उम्र क्या होनी चाहिए और माँ बनने पर क्या सावधानी बरतनी चाहिए। एक उपयोगी पुस्तक। ISBN 978-81-237-4126-0

24. बीमारी में भोजन कैसा हो?

रेनू चौहान पृ. 36 ₹ 16.00

आए दिन मनुष्य बीमार पड़ता है। वह तय नहीं कर पाता कि उस हालत में स्वस्थ रहने के लिए वह कैसा भोजन करे। इस विषय पर पुस्तक लाभदायक जानकारी देती है।

ISBN 978-81-237-2139-2

25. भोजन और हमारा शरीर

रेनू चौहान पृ. 52 ₹ 30.00

शरीर की मशीन सुचारु रूप से चलाने के लिए जरूरी विटामिन, प्रोटीन आदि कैसे प्राप्त करें? आम परिवार सस्ते में पौष्टिक भोजन कैसे पाएँ ? इन सबका विवरण है इस पुस्तक में। साथ ही हैं ज्ञानवर्धक मनोरंजक खेल भी। ISBN 978-81-237-1128-7

26. मानव शरीर

रमेश बिजलानी रूपां. : जितेन्द्र माहेश्वरी पृ. 20 ₹ 25.00

शरीर कैसे काम करता है? इसका सरल भाषा में विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं एक चिकित्सक।

ISBN 978-81-237-0691-7

27. मेले की माया

हरिसुमन बिष्ट पृ. 22 ₹ 10.00

यह कहानी गाँवों में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से लिखी गई है। माया ने हेल्थ मेले से जो जानकारी प्राप्त की उससे गाँव की सभी महिलाएँ लाभान्वित हुईं।

28. रिक्शेवाला

भूपिंदर सिंह बेदी अनु. : धर्मपाल साहिल पृ. 20 ₹ 14.00

बिशना गरीब घर से था। माँ बीमारी में चल बसी थी। पिता ने स्कूल से नाम कटा दिया। चाय की दुकान पर बिशना पिटता और रोता। बड़ा हुआ, रिक्शा चलाने लगा। ऊपर से नशा करने लगा। पूरा मोहल्ला दुखी था। डॉक्टर ने कहा—नशा कभी किसी का सगा नहीं हुआ। बात बिशना को समझ आ गई। अब उसने ठान लिया था कि कभी भी नशा नहीं करेगा।

ISBN 978-81-237-6925-7

29. व्हील चेयर

विनोद कुमार मिश्र पृ. 20 ₹ 11.00

व्हील चेयर अनेक प्रकार के होते हैं। विकलांग जन अपनी जरूरत के हिसाब से व्हील चेयर ले सकते हैं। कथा शैली में व्हील चेयर के अनेक पहलुओं की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है यहाँ।

ISBN 978-81-237-6819-9

30. शर्त

पुष्पा सक्सेना शीघ्र प्रकाश्य

कहानी की मूल विषय-वस्तु नवसाक्षरों में एड्स जैसी लाइलाज बीमारी के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर जोर देती है।

31. संगत

शारदा कुमारी पृ. 12 ₹ 11.00

इस पुस्तक में बुरी संगत में फंसे एक लड़के की रोचक कहानी है। ISBN 978-81-237-2123-1

32. सजा

डॉ. यतीश अग्रवाल पृ. 16 ₹ 16.00

प्रस्तुत कहानी में किशोरावस्था में हुई भूल के कारण एच.आई.वी. से ग्रस्त लड़की का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। ISBN 978-81-237-6233-3

33. साँझ सवेरा

मीनाक्षी स्वामी पृ. 24 ₹ 13.00

जानलेवा बीमारी 'एड्स' के कारणों व उससे बचने के उपायों पर प्रकाश डालती एक रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-1844-6

34. सात जन्मों का साथ

यतीश अग्रवाल पृ. 24 ₹ 13.00

सुखद दांपत्य जीवन में आने वाले सुख-दुखों को किस प्रकार दोनों दंपती आपस में मिलकर सामना करते हैं। ISBN 978-81-237-5695-0

35. साधारण रोग

सुरेश नाडकर्णी अनु. : हेमा जावडेकर पृ. 32 ₹ 25.00

आम जीवन में आदमी के साथ कुछ न कुछ घटता रहता है। ऐसे में पुस्तक बताती है कि साधारण रोग से कैसे निबटें। ISBN 978-81-237-2507-8

36. सुमन की जीत

राजुरकर राज पृ. 16 ₹ 18.00

लड़का हो या लड़की, आज सब मान्य हैं। लिंग परीक्षण कानूनी अपराध है। जब यह बात समझ में आई तो काकी शर्मिंदा हो गई। ISBN 978-81-237-6650-8

37. हड्डी टूटने पर

जितेन्द्र माहेश्वरी पृ. 32 ₹ 25.00

हड्डी विशेषज्ञ द्वारा लिखित यह पुस्तक हड्डी टूटने पर किए जाने वाले उपचार के बारे में सरल और सुबोध ढंग से बताती है। ISBN 978-81-237-1557-5

38. हमारे प्राण हमारे हाथ में

इरा गुणसेकरन अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 16 ₹ 16.00

पुस्तक बताती है कि मनुष्य अपनी सुरक्षा को बखूबी निभा सकता है बशर्ते वह ध्यान दे। स्वास्थ्य केंद्रित एक रचना। ISBN 978-81-237-3748-5

पर्यावरण

1. अकाल को बुलावा

सहदेव साहू अनु. : राजेंद्र प्रसाद मिश्र पृ. 20 ₹ 17.00

यह पुस्तक पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित है। इसमें बताया गया है कि कैसे गाँव वालों ने भूमि के कटाव और नुकसान को समझते हुए पुनः खेती की ओर मन लगाया।

ISBN 81-237-2484-3

2. ईंधन की कमी

चित्रा नाईक पृ. 12 ₹ 13.00

राज्य संसाधन केंद्र महाराष्ट्र द्वारा प्रकाशित इस सचित्र पुस्तक में गाँवों में ईंधन की समस्या के निवारण का रोचक विवरण है। ISBN 81-237-0844-0

3. कैसे करें जैविक खेती

लायक राम मानव पृ. 24 ₹ 20.00

जैविक खेती खेती का सबसे प्राकृतिक और निरापद तरीका है। इन दिनों इस तरह की खेती का प्रचलन काफी बढ़ गया है। इससे कृषि उत्पाद की गुणवत्ता तो बढ़ती ही है उत्पादन भी बढ़ जाता है। जैविक खेती के विभिन्न आयामों की जानकारी देती है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-7089-5

4. छोटे गाँव की बड़ी बात

शुभु पटवा पृ. 52 ₹ 30.00

यह पुस्तक गाँवों के परिवेश को वृक्षारोपण द्वारा हरा-भरा करने के महत्व पर प्रकाश डालती है, जिसकी आज सबसे बड़ी जरूरत है।

ISBN 978-81-237-0850-8

5. जंगल में जीवन

जित राय रूपां. : बटरोही पृ. 28 ₹ 20.00

पेड़-पौधों, जानवरों और पक्षियों के बारे में दिलचस्प जानकारी।

ISBN 81-237-0184-5

6. दीनू से दीनानाथ

राजेश कुमार साहू पृ. 16 ₹ 11.00

दीनू मजदूरी करते हुए, जानवरों को चराते हुए भी पढ़ना-लिखना सीख गया। उसने वृक्षारोपण की प्रेरणा दी, ताकि गाँव में ही शव-दहन हेतु लकड़ी की उपलब्धता हो सके।

ISBN 978-81-237-6667-6

7. नीली झील

कमलेश्वर रूपां. : रमेश थानवी पृ. 22 ₹ 14.00

प्रकृति प्रेम को दर्शाती एक भावनात्मक कहानी। ISBN 81-237-1763-6

8. पर्यावरण की पुजारिन

रामशंकर चंचल पृ. 24 ₹ 20.00

पर्यावरण चेतना का संदेश देती एक उपयोगी पुस्तक। वनांचल झाबुआ नगर की पृष्ठभूमि में कथा शैली में लिखी इस कहानी में पर्यावरण के प्रति सभी को जागरूक रहने की प्रेरणा मिलती है। ISBN 978-81-237-6544-0

9. पेड़ों की महिमा

रस्किन बॉन्ड रूपां. : प्रेम सिंह नेगी पृ. 24 ₹ 35.00

आमतौर पर पाए जाने वाले भारतीय वृक्षों और उनमें घोंसला बनाकर रहने वाली चिड़ियों की अद्‌भुत जानकारियों का संकलन। ISBN 81-237-0191-8

10. बैक्टीरिया

जी जयसीलन अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 20 ₹ 17.00

पुस्तक बताती है कि आस-पास गंदगी बिलकुल न फैलने दें। स्वस्थ रहना हो तो गंदगी को हटाना ही पड़ेगा। ISBN 978-81-237-3747-8

11. मैं पीपल हूँ

जगदीश चंद्रिकेश पृ. 12 ₹ 10.00

अक्सर हम अपने मन में कई प्रकार की भ्रांतियाँ पाल लेते हैं। जैसे, पीपल के नीचे नहीं बैठना चाहिए इत्यादि। यह पुस्तक इसी तरह की अनेक शंकाओं का समाधान और पीपल के इतिहास से परिचय कराती है। ISBN 978-81-237-4723-1

12. लीला का कमाल

केशव चंद्र पृ. 20 ₹ 13.00

थली गाँव की औरतों ने एकजुट हो बंजर भूमि पर वृक्षारोपण कर पास-पड़ोस के गाँवों की महिलाओं को भी पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रेरित किया। ISBN 978-81-237-2315-0

13. वीरगढ़ के वीर

हरीश नवल पृ. 24 ₹ 13.00

पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण कहानी, जिसे सुपरिचित लेखक ने बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। ISBN 81-237-4127-8

14. हम भी तुम्हारे हैं

शंकर सुल्तानपुरी पृ. 20 ₹ 12.00

जंगल के पेड़-पौधों को काट-काटकर अपने परिवार का जीवन-यापन करने वाले लकड़हारे के साथ क्या घटा कि उसने पेड़-पौधे काटने से तौबा कर ली। एक रोचक कहानी।

ISBN 978-81-237-6888-5

15. हरियाली और सफाई

अनु. : जे.एल. रेड्डी पृ. 12 ₹ 16.00

हमें आस-पास के पर्यावरण को ठीक रखना है तभी हम स्वस्थ रहेंगे। खूबसूरत चित्रों के माध्यम से समझाती यह उपयोगी पुस्तक। ISBN 81-237-3772-4

पशुपालन

1. कुरज बाँधी गाय

इंदरदान देथा पृ. 40 ₹ 30.00

यह पशु की देखभाल संबंधी कहानी है। इसमें गाय की विभिन्न नस्लों, उसके चारे, बीमारियों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

ISBN 978-81-237-0938-3

2. नेक अभियान

जनार्दन मिश्र पृ. 16 ₹ 19.00

नगरों-महानगरों में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े पॉलिथीन को निगलकर कितने ही गाय, भैंस आदि पशु अकाल मौत को प्राप्त हो जाते हैं। इसी समस्या पर लिखी गई है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-5629-5

3. भूरा मेरा है

सरला भाटिया पृ. 16 ₹ 16.00

परंपरा के नाम पर सूअर जैसे निरीह पशु का भैंसे जैसे विशालकाय पशु से मरवाने की घिनौनी प्रथा का एक छोटी लड़की द्वारा किया गया प्रतिरोध कहानी का मूल भाव है।

ISBN 978-81-237-5863-0

4. रेशमा

सरदार सिंग बैनाडे अनु. : लछमन हर्दवाणी पृ. 24 ₹ 13.00

मराठी से हिंदी में अनूदित पुस्तक में गो-पालन विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है।

ISBN 978-81-237-3210-6

लोक-साहित्य

1. अड़ियल घोड़ी

सुभाष चंद्र जैन पृ. 16 ₹ 9.00

एक रोचक किस्सा जो अनायास सोचने पर मजबूर करता है कि हमारे पाप-पुण्य हमारे साथ-साथ चलते हैं।

ISBN 978-81-237-5839-8

2. आधी पूँछवाला राक्षस

प्रत्यूष गुलेरी पृ. 12 ₹ 11.00

'लींडापीर' नामक शैतान से कांगड़ावासियों को मुक्ति मिलती है। हिमाचल प्रदेश की एक लोकप्रिय कथा।

ISBN 978-81-237-2502-4

3. आओ गले मिलें

मनोहर पुरी पृ. 16 ₹ 11.00

एक ऐतिहासिक रचना, जो बताती है कि मिल-जुलकर रहने से परिवार, राज्य कभी नहीं बिखरता।

ISBN 978-81-237-3717-1

4. आल्हा-ऊदल

देवीशरण सिंह 'ग्रामीण' पृ. 14 ₹ 11.00

बुंदेलखंड की मशहूर लोककथा पर आधारित। ISBN 81-237-2578-7

5. ईसुरी

राजमणि दिवाकर पृ. 14 ₹ 4.00

बुंदेली के जनप्रिय कवि ईसुरी का संक्षिप्त परिचय। ISBN 81-237-2578-7

6. एक और पहलू

प्रभुदयाल खट्टर पृ. 16 ₹ 12.00

छोटी-छोटी कथाएँ जो जीने का नया संस्कार देती हैं। वास्तव में इन घटनाओं से ही आदमी अपना विकास कर पाता है। ISBN 81-237-3053-1

7. करामातीलाल की तलवार

प्रकाश मनु पृ. 14 ₹ 16.00

काछीपुर के करामातीलाल की यह कहानी जितनी रोचक है उतनी हंसाती भी है और गुदगुदाती भी है। ISBN 978-81-237-5840-4

8. किरात और अर्जुन की लड़ाई

महाकवि भारवि; पुनर्लेखन : राधावल्लभ त्रिपाठी पृ. 32 ₹ 13.00

भगवान शंकर और पार्वती किरात और किराती का वेश धारण कर अर्जुन की परीक्षा लेने में कैसे कामयाब हुए? उत्सुकता जगाती यह ऐतिहासिक कथा। ISBN 978-81-237-2917-6

9. किस्सा डाकू रौहिणेय का

राधावल्लभ त्रिपाठी पृ. 28 ₹ 10.00

यह कहानी हजारों साल पुरानी है। एक डाकू था। वह सेठ-साहूकारों को लूटता था पर कभी पकड़ में न आया। आखिर एक दिन डाकू राजा को सारी आपबीती सुनाकर संन्यासी हो गया। ISBN 81-237-3507-3

10. किस का धन

गोपाल मेघाणी अनु. एवं रूपां. : वर्षा दास पृ. 20 ₹ 17.00

पुस्तक बताती है कि सरकारी वस्तुओं का इस्तेमाल व्यक्तिगत कार्यों में नहीं करना चाहिए। गुजराती से हिंदी में अनूदित एक प्रेरणाप्रद पुस्तक। ISBN 978-81-237-2960-2

11. गुलेर का राजा हरिचंद

प्रत्यूष गुलेरी पृ. 20 ₹ 8.00

हिमाचल प्रदेश के एक परोपकारी राजा की लोकप्रिय लोककथा। ISBN 81-237-2503-5

12. गूजरी महल

मधुसूदन पाटिल पृ. 12 ₹ 7.00

इस पुस्तक में हिसार के गूजरी महल के बारे में रोचक ढंग से बताया गया है। ISBN 81-237-2571-X

13. जन्मदिन

बलदेव सिंह बद्दन पृ. 12 ₹ 20.00

एक वंचित और गरीब बालक हमउम्र धनवान किंतु सहृदय बालक की मदद से पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त कर लेता है। एक मार्मिक कथा। ISBN 978-81-237-5709-4

14. जैसी करनी वैसी भरनी

वीरेन्द्र तंवर पृ. 12 ₹ 11.00

लालच की प्रवृत्ति से बचने की सीख देती लोककथा। ISBN 978-81-237-1829-3

15. त से तेनालीराम ब से बीरबल

दिविक रमेश पृ. 23 ₹ 13.00

इस पुस्तक में तेनालीराम और बीरबल की क्रमशः 'लालच की हार' और 'झपकी', इन दो कहानियों को लिया गया है। तेनालीराम और बीरबल ने अपनी सूझबूझ से समाज में ढेरों उदाहरणों और कार्यों द्वारा आम जनता को न्याय दिलवाया। आकर्षक चित्रांकन।

ISBN 978-81-237-5099-6

16. तीन कंजूस व अन्य कहानी

यू.एस. आनन्द पृ. 12 ₹ 11.00

अपनी तरह की दो अद्भुत कहानियाँ, जो पाठकों को गुदगुदाने का काम करेगी।

ISBN 978-81-237-5192-4

17. दो ठग

गौतम शर्मा 'व्यथित' पृ. 8 ₹ 14.00

'नहले पर दहला' वाली सूक्ति यहाँ चरितार्थ होती है। दो ठग कैसे आपस में बुद्धू बने ? पढ़िए यह रोचक कहानी। ISBN 81-237-3296-1

18. दो भाई

निशात फारूक पृ. 16 ₹ 12.00

यह कहानी अमीर और गरीब भाई के बारे में है। अमीर भाई के द्वारा गरीब भाई का शोषण दिल दहला देता है लेकिन गरीब भाई अंततः बड़े भाई के परिवार की देखभाल करता है।

ISBN 81-237-4287-3

19. धन का खजाना

मुकुल कलार्थी अनु. : वर्षा दास पृ. 8 ₹ 10.00

गुजराती की एक लोकप्रिय रचना की प्रस्तुति। ISBN 978-81-237-3116-2

20. नौकरी रोशनी करने की

जगदीश चंद्रिकेश पृ. 12 ₹ 7.00

गुजरात के आदिवासी समुदाय की एक रोचक लोककथा, जिसे सुपरिचित लेखक ने सरल भाषा में लिखा है। ISBN 81-237-4129-4

21. पंडित कौन?

रघुवीर चौधरी पृ. 16 ₹ 16.00

यह कहानी एक ऐसे नौजवान की है जो हर बात को तोते की तरह रट लेता था और अपने को विद्वान समझता था। आखिर इसी बड़प्पन में उसे मुंह की खानी पड़ी।

ISBN 978-81-237-3520-7

22. पढ़ गई पालो

शरनजीत कौर पृ. 16 ₹ 13.00

एक कामवाली की लड़की अपनी मेहनत से स्थानीय स्कूल में शिक्षिका बन गई; इसी बात को दर्शाती है यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-5899-2

23. पसीने की कमाई

नर्मदा प्रसाद गुप्त पृ. 12 ₹ 11.00

यह एक बुंदेलखंडी रचना है जिसमें अपने हाथ की मेहनत और मनुष्य की स्वाभाविक आदत को दिखाया गया है कि क्यों गृहणियाँ लालच को आसरा देती हैं। ISBN 978-81-237-3408-8

24. बंदगी

रणवीर रांग्रा पृ. 14 ₹ 11.00

अकबर बादशाह के जीवन से जुड़े एक रोचक किस्से को कहानी में पिरोया है वरिष्ठ लेखक रणवीर रांग्रा ने। ISBN 81-237-4269-X

25. बलिदान

श्रीकृष्ण पृ. 12 ₹ 17.00

एक बूढ़ी माँ ने अपने इकलौते बेटे को राज्य की रक्षा के लिए कुर्बान कर दिया। बताती है माँ के जीवट की यह ऐतिहासिक कथा। ISBN 978-81-237-4300-4

26. बालक की सीख

सुदर्शन वशिष्ठ चित्र : दीपक दास पृ. 12 ₹ 12.00

लोककथा पर केंद्रित यह पुस्तक बताती है कि हम सबको अपने घर के बुजुर्गों की हमेशा सेवा करनी चाहिए, न कि उनकी उपेक्षा। दादा जी और पोते का संवाद बड़ा रोचक है और मर्मस्पर्शी भी। ISBN 978-81-237-6924-0

27. बुढ़ापे का प्रेम

गणेश खुगशाल 'गणी' पृ. 16 ₹ 9.00

पहाड़ की एक रोचक लोककथा जिसमें बुजुर्ग दंपति की रोचक जीवन-शैली को दिखाया गया है। ISBN 81-237-4353-X

28. महाराज भगीरथ का सवाल

रघुवीर चौधरी पृ. 16 ₹ 12.00

यह एक ऐतिहासिक रचना है, जिसमें शुरू से अंत तक उत्सुकता बनी रहती है।

ISBN 81-237-3450-6

29. मूँछ का बाल

रमाकांत 'कांत' पृ. 20 ₹ 16.00

राजस्थान के लेखक की एक ऐतिहासिक रचना जो कई सारे अर्थ खोलती है।

ISBN 978-81-237-5830-5

30. मूमल महेन्द्र की प्रेमकथा

मीनाक्षी स्वामी पृ. 20 ₹ 12.00

जैसलमेर की रियासत लोदरवा की राजकुमारी मूमल और अमरकोट के राजकुमार महेन्द्रसिंह की अमर प्रेम कहानी पर आधारित है यह पुस्तक। आकर्षक चित्रांकन।

ISBN 978-81-237-5070-5

31. मौसी का बेटा

रामसरूप अणखी पृ. 16 ₹ 20.00

अंधविश्वासों को दूर करती एक प्रेरक कथा। ISBN 978-81-237-5713-1

32. राक्षस की अंगूठी

विशाख दत्त पुनर्लेखन : तारानंद वियोगी पृ. 32 ₹ 20.00

संस्कृत के विख्यात नाटक 'मुद्राराक्षस' को सरल भाषा में हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार ने नवसाक्षरों के लिए लिखा है। इसमें चाणक्य की कुशल राजनीति का परिचय मिलता है।

ISBN 978-81-237-2917-6

33. वतायो फकीर की कहानियाँ

मोतीलाल जोतवाणी पृ. 12 ₹ 11.00

छोटी कथाएँ जीवन को कैसे गति देती हैं? कौतूहल जगाती है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-2842-1

34. वसंतसेना

महाकवि शूद्रक पुनर्लेखन : प्रयाग शुक्ल पृ. 32 ₹ 15.00

संस्कृत साहित्य की विख्यात कहानी को नवसाक्षरों के लिए सरल और रोचक शब्दों में प्रयाग शुक्ल ने लिखा है। इसमें कथा है कि किस तरह उज्जयिनी की नर्तकी बाद में नगरवधू का दर्जा पा लेती है। ISBN 978-81-237-2892-6

35. शंख परी

मनोहर पुरी पृ. 20 ₹ 14.00

शंख परी धरती पर कैसे आ गई? उसने क्या-क्या किया? रोचक कहानी।

ISBN 978-81-237-4128-4

36. साँझ-सकारे

मलय (संकलनकर्ता) पृ. 16 ₹ 12.00

ग्रामीण अंचलों के प्रसिद्ध गीत, जो जनमानस में रचे-बसे हैं।

37. साँझी दीवार

संतोख सिंह धीर पृ. 20 ₹17.00

गाँव-घरों में दीवार की वजह से भाइयों के बीच होने वाले कलह की मार्मिक कथा ।

ISBN 978-81-237-5714-8

38. सुन्नी भूंकू

श्रीनिवास जोशी पृ. 20 ₹ 9.00

हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले की एक लोकप्रिय प्रेमकथा। ISBN 81-237-2295-8

39. सुरहिन

बलभद्र तिवारी पृ. 14 ₹ 11.00

सुरहिन गाय और सिंह की रोचक गाथा। ISBN 978-81-237-2603-8

40. हरदौल

लोकराम रजक पृ. 12 ₹ 12.00

ओरछा के राजा जुझारसिंह के छोटे भाई हरदौल की वीरता की गाथा। ISBN 978-81-237-2569-7

कथा साहित्य

1. अपना रास्ता लो बाबा

काशीनाथ सिंह रूपां. : महेश दर्पण पृ. 16 ₹ 11.00

शहर में सब बीमारियों का इलाज होता है। यही सुनकर बेचू बाबा शहर आए। देवनाथ ने बाबा के दर्द को समझा और डाक्टर को दिखाया। बाबा आश्वस्त हो आशीर्वाद दे अपने गाँव लौट गए।

ISBN 978-81-237-2344-0

2. अपनी धरती का सुख

सत्यदेव संवितेन्द्र पृ. 20 ₹ 10.00

यह कहानी बदनू की है जो शहर जाकर शहरी बाबू बन गया था मगर अपने बेटे की जिद के आगे उसे झुकना पड़ा। उसने तय कर लिया कि उसका परिवार अब गाँव में ही रहेगा।

ISBN 81-237-4744-6

3. अपने-बेगाने

पृथ्वीराज मोंगा पृ. 16 ₹ 11.00

इस कहानी में वृद्धावस्था में संतानों द्वारा किए गए अमानवीय व्यवहार को रेखांकित किया गया है। वृद्धों के प्रति संवेदना बनाए रखने में प्रस्तुत कहानी अत्यंत सार्थक है।

ISBN 978-81-237-5466-6

4. अब जवाब दो

नरेन्द्र बाम पृ. 40 ₹ 45.00

इस पुस्तक में दो कहानियाँ संकलित हैं। एक कहानी में निस्संतान स्त्री बुधनी काकी की व्यथा है तो दूसरी में गरीबी और प्रयत्न के बीच वार्तालाप है।

5. आदमी जिसने भगवान को देखा

बाल गंगाधर तिलक रूपां. : जे.एल. रेड्डी पृ. 32 ₹ 20.00

तेलुगु से हिंदी में अनूदित एक रचना का सरलीकरण, नवसाक्षरों के लिए।

ISBN 978-81-237-4350-9

6. उड़ान

मो. साजिद खान पृ. 20 ₹ 16.00

मियाँ रहमत अली उमर के चौथेपन में भी कबूतरबाजी के लिए तैयार हो जाते हैं। आखिर क्या मजबूरी थी उनकी? एक मार्मिक कथा। ISBN 978-81-237-6510-5

7. उपकार का बदला

श्रीरमणलाल सोनी अनु. : जगदीश चंद्रिकेश पृ. 32 ₹ 9.00

गुजराती की एक श्रेष्ठ रचना का हिंदी अनुवाद। ISBN 81-237-3995-8

8. उस रात की बात

मिथिलेश्वर पृ. 12 ₹ 11.00

बिना किसी स्वार्थ के मुसीबत के समय अनजान शहरी के काम आना ग्रामीण जीवन में व्याप्त सरलता को उजागर करता है, यही इसकी कहानी है। ISBN 81-237-0592-1

9. उसने कहा था

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' रूपां. : अमितेश्वर पृ. 20 ₹ 13.00

गुलेरी जी की मार्मिक कहानी, जिसका हिंदी साहित्य में अद्वितीय स्थान है।

ISBN 978-81-237-0899-7

10. ओट

के.एल. गर्ग अनु. : अमरीक सिंह दीप पृ. 20 ₹ 12.00

पंजाबी के वरिष्ठ कथाकार की एक महत्वपूर्ण रचना। ISBN 81-237-4277-0

11. कफ़न

प्रेमचंद रूपां. : कुमार नरेन्द्र पृ. 20 ₹ 13.00

अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद की एक यादगार कहानी। ISBN 978-81-237-4289-2

12. कल्लन बाबू

पुष्पा सिंह 'विसेन' पृ. 12 ₹ 13.00

प्रस्तुत कहानी का केंद्रीय पात्र समरू और भुवरी की पाँच संतानों में से सबसे बड़ा बेटा कलुवा है। कहानी हमें बताती है कि किस प्रकार कलुवा अपने मालिक के बेटे शंभू की मदद से एक सरकारी दफ्तर में नौकरी मिलने पर कल्लन बाबू बना, और अपने भाई-बहनों को शिक्षित किया।

ISBN 978-81-237-6124-4

13. करामात

कर्त्तार सिंह दुग्गल पृ. 16 ₹ 7.00

वरिष्ठ कथाकार की एक श्रेष्ठ कहानी, नवसाक्षरों के लिए। ISBN 81-237-4258-4

14. करमू

बलदेव वंशी पृ. 16 ₹ 12.00

बाल श्रम पर केंद्रित एक विचारपरक कहानी। ISBN 81-237-4767-5

15. कांकेर के गाँधी : इंदरू केंवट

परदेशी राम वर्मा पृ. 20 ₹ 16.00

प्रस्तुत पुस्तक हमें छत्तीसगढ़ के इंदरू केंवट नामक एक जुझारू किसान की कहानी बताती है। स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में गाँधी जी के विचारों से प्रेरित इंदरू अँग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। स्वाधीनता की लड़ाई में बढ़-चढ़कर भाग लेने के कारण वे छत्तीसगढ़ में कांकेर गाँधी के नाम से विख्यात हो गए।

ISBN 978-81-237-6523-5

16. काम एक : तरीके तीन

वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता पृ. 16 ₹ 12.00

प्रस्तुत कहानी में एक ही कार्य को करने वाले तीन विभिन्न सोच वाले व्यक्तियों के चरित्र को बखूबी दिखाया गया है। ISBN 978-81-237-2326-6

17. काकी

सियारामशरण गुप्त पृ. 8 ₹ 7.00

इस कहानी में शामू के बाल सुलभ मन का मानवीय चित्रण है, जो अपनी काकी की मौत का सही अर्थ नहीं समझ पाता है। वह अपनी काकी को भगवान के यहाँ से पतंग के माध्यम से लौटा लाने की योजना बनाता है।

ISBN 81-237-1324-X

18. गलत संगत

जनार्दन मिश्र पृ. 16 ₹ 15.00

बेटा यदि गलत भी करे तो माँएँ अकसर उसको ढँकने का प्रयास करती हैं। लेकिन यही प्रवृत्ति लड़के को अपराधी भी बना सकती है। प्रस्तुत कहानी इसी भावभूमि पर है।

ISBN 978-81-237-7203-5

19. गलती का एहसास

अश्वघोष पृ. 16 ₹ 10.00

गाँव के भोले-भाले लोग एक साधू के चक्कर में आकर अपना सुख-चैन गँवा बैठे; वहीं गाँव के ही दो नौजवानों ने मक्कार साधू के चंगुल से गाँववालों को बाहर निकाला। वरिष्ठ लेखक की एक असरदार रचना। ISBN 978-81-237-4354-7

20. गाँव के लोग

मिथिलेश्वर पृ. 24 ₹ 9.00

गाँव के लोगों के मन में अभी भी भाईचारा और मदद की भावना देखने को मिलती है; यही बताती है यह कहानी। ISBN 81-237-4421-8

21. गुरुजी

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय रूपां. : हरिमोहन पृ. 16 ₹ 12.00

बांग्ला के सुपरिचित कथाकार की एक महत्वपूर्ण रचना का हिंदी सरलीकरण लेखक हरिमोहन द्वारा प्रस्तुत। ISBN 81-237-4391-2

22. चिट्ठियाँ

बलजीत सिंह रैना पृ. 16 ₹ 12.00

बुजुर्ग गुलाबा आजकल दुखी रहता है। उसका बेटा छिंदा विदेश में नौकरी करता है। यों, गाँव आकर उसने घर की मरम्मत करवा दी है। अकेला गुलाबा क्या करता! पहले से आई बेटे की चिट्ठियाँ पढ़ता और आँसू बहाता। अकेलेपन को लेकर दिल को छू जाने वाली एक बेजोड़ कहानी।

ISBN 978-81-237-6922-6

23. धरती का बेटा

युगेश शर्मा पृ. 20 ₹ 13.00

हिंदी के सुपरिचित कथाकार की एक महत्वपूर्ण रचना। ISBN 81-237-4198-7

24. धोरों पर ढाणी

कृष्ण कुमार रत्तू पृ. 16 ₹ 12.00

यह कहानी अकडूं उर्फ आरिफ की है जो रेत के टीलों में पलकर बड़ा हुआ। बाद में पढ़कर आरिफ ने सबका मान बढ़ाया। ISBN 978-81-237-4837-5

25. चुनावी चक्कर

प्रेम सिंह नेगी पृ. 16 ₹ 6.00

सरपंच चालूराम अपनी चालों से हमेशा जीतता था। लेकिन गाँव के लोगों ने भोलाराम को खड़ा किया और भारी मतों से जितवा दिया। ISBN 81-237-2678-3

26. छोटी-छोटी बातें

गुरदयाल सिंह पृ. 16 ₹ 20.00

आम तौर पर छोटी बातों का हमारे जीवन में बड़ा योगदान होता है, जिन्हें हम अकसर भुला बैठते हैं। यही बताती है यह पुस्तक। ISBN 978-81-237-5987-6

27. जंगल

चित्रा मुद्गल पृ. 20 ₹ 13.00

वरिष्ठ कथाकार की बहुत ही आत्मीय शैली में लिखी रचना, जो बतलाती है कि छोटों के मन को समझना कितना कठिन है। ISBN 978-81-237-5867-1

28. जग्गो ताई

चंद्रकिरण सौनरेक्सा पृ. 12 ₹ 8.00

हिंदी की महत्वपूर्ण कथा-लेखिका की एक असरदार रचना। जग्गो ताई ने देश की रक्षा के लिए अपनी हवेली को बेचने का निर्णय निडर होकर ले ही लिया। ISBN 81-237-4120-0

29. जमीन का आखिरी टुकड़ा

इब्राहीम शरीफ रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 32 ₹ 15.00

पिता के मरने के बाद घर बिखर गया। बड़े भाई ने छोटे भाइयों को पढ़ाया-लिखाया। पति की याद दिलाता जमीन का आखिरी टुकड़ा जब बिका तो माँ कैसे चुप-सी हो गई? पढ़िए एक मार्मिक कहानी। ISBN 81-237-2348-3

30. जमाना बदल गया

देवशंकर नवीन पृ. 12 ₹ 14.00

रूढ़ियों व अंधविश्वासों पर केंद्रित एक कहानी। ISBN 81-237-0591-3

31. जल्लाद

नुज़्हत हसन पृ. 16 ₹ 12.00

मानवीय संवेदनाओं को उकेरती एक मर्मस्पर्शी कहानी। इसमें जल्लाद पेशे से जुड़े एक ऐसे पिता का चित्रण किया गया है, जो पुत्र के स्थान पर पुत्री के जन्म से झूम उठा। पुत्री के जन्म से उसे वंशानुगत जल्लादी पेशे से मुक्ति मिली।

ISBN 81-237-4409-9

32. जुम्मन मियाँ की घोड़ी

पुन्नी सिंह रूपां. : शरद सिंह पृ. 16 ₹ 8.00

जुम्मन मियाँ की घोड़ी ने ऐन वक्त पर धोखा देकर जुम्मन मियाँ को कैसे अपमानित किया? बताती है सुपरिचित रचनाकार की महत्वपूर्ण रचना।

ISBN 81-237-4409-9

33. जागती आँखों का सपना

कुलवंत कोछड़ पृ. 14 ₹ 15.00

कहानी बताती है कि किस प्रकार एक राजा अपने बीमार पुत्र की मृत्यु के पश्चात जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझ गया। ISBN 978-81-237-6206-7

34. झिलमिल

निशात फातिमा पृ. 20 ₹13.00

झिलमिल कैशोर्य में आ गई है पर माँ उस पर लगातार और तरह-तरह की बंदिशें लगाती है। इससे घबराकर लड़की भाग जाती है—अपनी चाची के घर। अधिक बंदिश ठीक नहीं।

ISBN 978-81-237-6629-4

35. टोटकों का फेर

प्रेम सिंह नेगी पृ. 24 ₹ 19.00

इस पुस्तक में दो कहानियाँ हैं। पहली कहानी में बताया गया है कि ओझा के काले जादू के चक्कर में पड़कर बीमार हुई एक ग्रामीण महिला का डाक्टर से इलाज करवाया जाता है और वह ठीक हो जाती है। दूसरी कहानी अंधविश्वास के बारे में है जिसमें एक स्त्री की आर्थिक हानि होती है। ISBN 978-81-237-0528-6

36. टोबा टेक सिंह

सआदत हसन मंटो रूपां. : शेरजंग गर्ग पृ. 20 ₹ 12.00

उर्दू के प्रसिद्ध रचनाकार की विश्व प्रसिद्ध कहानी का रूपांतरण सरल भाषा में प्रस्तुत।

ISBN 978-81-237-4351-6

37. डाक मुंशी

फकीर मोहन सेनापति रूपां. : गिरीश पंकज पृ. 16 ₹ 7.00

हरिसिंह डाकखाने में चपरासी थे। उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा डाक बाबू बन जाए। इच्छा पूरी भी हुई। अफसर बने बेटे ने पिता को सम्मान तो दूर उलटे दुत्कारना शुरू कर दिया। उड़िया की एक महत्वपूर्ण रचना।

ISBN 81-237-4288-6

38. ढोल

अमितेश्वर पृ. 16 ₹ 18.00

झूठी आन-बान के दिखावे का अंत बर्बादी होता है, इस बात को दर्शाती कहानी।

ISBN 978-81-237-0587-3

39. तीन कहानियाँ पंचतंत्र से

रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 20 ₹ 13.00

पंचतंत्र की तीन रोचक कहानियों का नवसाक्षरों के लिए सरल भाषा में रूपांतरण।

ISBN 81-237-1788-1

40. तीन में से घटा तीन

महिम बरा रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 24 ₹ 13.00

पूरनकान्त घर के खर्चों में उलझा रहता है। कभी भी उसके पास पैसा नहीं बचता। हमेशा अपने भाग्य पर रोता रहता है। जितना कमाता है, उतना ही गंवा देता है। प्रस्तुत कहानी में जीवन के संघर्ष का बेबाक चित्रण है।

ISBN 978-81-237-2115-6

41. थार पर जिन्दगी

कासिम खुर्शीद पृ. 12 ₹ 11.00

यह कहानी किसना की है जो भेड़-बकरियाँ चराता था। अकाल की विपत्ति से कैसे उसने अपने को संभाला।

ISBN 978-81-237-4781-1

42. तीन सवाल

लियो तोल्सतोय रूपां. : चन्द्रकिरण राठी पृ. 16 ₹ 10.00

एक राजा था। उसे ऐसे उपाय की तलाश थी कि उसकी कभी हार न हो। राजा के मन में तीन सवाल उपजे। किसी काम को करने का सही समय क्या है? किसकी बात सुननी चाहिए? और सबसे जरूरी काम क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर एक साधू ने किस तरह दिए? पढ़िए विश्व प्रसिद्ध रूसी लेखक की यह कहानी।

ISBN 81-237-0976-5

43. दुकान की चाबी

पोनकुन्नम वर्की अनु. : एच. बालसुब्रह्मण्यम पृ. 28 ₹ 15.00

बरगीस और कोशी दो दोस्त थे। बरगीस हमेशा चतुराई से कुछ पैसा बचाता रहा। मलयालम से अनूदित एक मार्मिक रचना।

ISBN 978-81-237-2338-7

44. दो कहानियाँ पंचतंत्र से

रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 16 ₹ 12.00

यह पंचतंत्र की एक लोकप्रिय रचना है। इसमें साँप और मेंढक की रोचक कथा है।

ISBN 978-81-237-2366-2

45. धनीराम की बग्गी

जोगेश दास रूपां. : नासिरा शर्मा पृ. 16 ₹ 12.00

नौकरानी से अवैध संबंध बनाने पर साहूकार अपने बेटे को बचाता है। इस दुखद घटना से जन्मी एक मार्मिक कथा।

ISBN 81-237-2117-X

46. नई सुबह

जनार्दन मिश्र पृ. 16 ₹ 7.00

पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती। 'जब जागो तभी सवेरा' की उक्ति चरितार्थ करती एक महत्त्वपूर्ण रचना।

ISBN 81-237-4125-1

47. नमक का दारोगा

प्रेमचंद रूपां. : अशोक वशिष्ठ पृ. 20 ₹ 13.00

प्रेमचंद द्वारा लिखी एक प्रसिद्ध रचना। यह रचना मानवीय मूल्यों की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है।

ISBN 978-81-237-4511-4

48. नील मास्टरनी

गोदावरीश महापात्र अनु. : राजेन्द्र प्रसाद मिश्र पृ. 12 ₹ 11.00

ओड़िया साहित्य की महत्वपूर्ण रचना का हिंदी अनुवाद।

ISBN 81-237-3112-4

49. पंच परमेश्वर

प्रेमचंद पृ. 28 ₹ 12.00

एक असरदार रचना। सरल भाषा में प्रस्तुत।

ISBN 978-81-237-4885-6

50. पढ़ने का हक

नासिरा शर्मा पृ. 18 ₹ 14.00

पढ़ने की रुचि को प्रकट करती सुपरिचित महिला कथाकार की एक उत्कृष्ट रचना।

ISBN 81-237-2775-5

51. पतंग

मनोज दास पृ. 16 ₹ 7.00

ओड़िया की एक बेहतरीन रचना का हिंदी अनुवाद।

ISBN 81-237-3790-4

52. पछतावा

प्रेमचंद रूपां. : पुष्पा सक्सेना पृ. 24 ₹ 11.00

हिंदी कथा साहित्य के सम्राट माने जाने वाले मुंशी प्रेमचंद की यह कहानी झूठ, अन्याय और अत्याचार पर दया, धर्म और सत्य की विजय की कहानी है।

ISBN 81-237-4658-X

53. पहलवान की ढोलक

फणीश्वरनाथ 'रेणु' रूपां. : भारत यायावर पृ. 24 ₹ 13.00

हिंदी के प्रमुख कथाकार 'रेणु' की कलम से लिखी एक पहलवान की कथा, जो जीवन के सारे उतार-चढ़ावों को झेलता हुआ भी ढोल की थाप में अपनी आस्था बनाए रखता है।

ISBN 978-81-237-0897-3

54. पाँच बेटों का पिता

बचिंत कौर अनु. : फूलचंद मानव पृ. 24 ₹ 13.00

'छोटा परिवार-सुखी परिवार' का संदेश देती इस कहानी में पाँच बेटों के पिता की दुर्दशा का मार्मिक विवरण है; जबकि उनका भाई, जिसका केवल एक बेटा था, सुख से जीवन बिता रहा था।

ISBN 978-81-237-1625-1

55. पानी

रामदरश मिश्र पृ. 16 ₹ 12.00

ग्रामीण समाज में व्याप्त छुआछूत की मानसिकता को बदलने वाले प्रतिष्ठित कथाकार की एक प्रभावी रचना।

ISBN 81-237-1531-5

56. पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद रूपां. : अरविन्द त्रिपाठी पृ. 14 ₹ 9.00

मधूलिका ने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्रेम की बलि दे दी। त्याग, समर्पण और कर्तव्यबोध का संदेश देती ऐतिहासिक परिवेश की लोकप्रिय कहानी।

ISBN 81-237-1766-6

57. पिंजरा

द्रोणवीर कोहली पृ. 24 ₹ 19.00

तोते के माध्यम से मानवीय भावनाओं पर लिखी गई हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार की कहानी।

ISBN 81-237-0939-0

58. प्यार की खुशबू

शमसुल हक उस्मानी अनु. : कौसर मजहरी पृ. 30 ₹ 9.00

यह पुस्तक रिश्तों को समझने का महत्व दर्शाती है।

ISBN 81-237-1974-4

59. प्रसाद

लीलावती भागवत पृ. 16 ₹ 11.00

भाई-बहन के रिश्ते को दर्शाती एक असरदार रचना।

ISBN 81-237-4109-X

60. बंधुआ मजदूर

गणेश खरे पृ. 26 ₹ 15.00

प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र श्यामू है। अपनी सूझ-बूझ से वह कैसे बंधुआ मजदूर रखने वाले ठेकेदारों के चंगुल से बच निकलता है, पूरी कहानी श्यामू के इसी संघर्ष पर केंद्रित है।

ISBN 978-81-237-5715-5

61. बकरी का बच्चा

संदीप श्रीवास्तव पृ. 12 ₹ 11.00

बकरी और उसके छोटे बच्चे के प्रति नन्ही मांशू अत्यधिक संवेदनशील है। बकरी के बच्चे के पानी में बह जाने से मांशू बेहद उदास हो जाती है। एक मार्मिक कथा।

ISBN 978-81-237-6551-8

62. बघेलो साघणी

रामसरूप अणखी पृ. 16 ₹ 11.00

गाँव की मजबूत कद-काठी की बघेलो ने अपने बलबूते शुरू से आखिर तक कैसे संघर्ष किया? बताती है यह असरदार रचना।

ISBN 978-81-237-4199-5

63. बड़े घर की बेटी

प्रेमचंद पृ. 24 ₹ 14.00

अमर कथाकार की एक बेहतरीन रचना, जो बड़े घर की बेटी होने का अर्थ बतलाती है।

ISBN 978-81-237-4884-9

64. बरगद का पेड़

जे. भाग्यलक्ष्मी पृ. 20 ₹ 13.00

हमारे वृक्ष उतने ही आदरणीय हैं जितने हमारे घर के बुजुर्ग। एक बेहतरीन रचना।

ISBN 81-237-2683-4

65. बादशाह सलामत

चिनु मोदी अनु. : वर्षा दास पृ. 8 ₹ 20.00

गुजराती के वरिष्ठ कथाकार की एक रोचक कथा।

ISBN 978-81-237-2543-7

66. बूढ़ी काकी

प्रेमचंद रूपां. : सुभाष चंदर पृ. 20 ₹ 13.00

किस प्रकार भतीजा काकी को बहला-फुसला कर जायदाद अपने नाम कर लेता है और खाने को रोटी भी नहीं देता। महान कथाकार की दिल को छू लेने वाली रचना।

ISBN 978-81-237-4512-1A

67. बेटियाँ

कमलेश व्यास 'कमल' पृ. 16 ₹ 15.00

बेटियों की अवहेलना और बेटों को लाड़-दुलार एक आम भारतीय पारिवारिक परिदृश्य है, किंतु अकसर होता यह है कि बेटे से अधिक बेटियाँ माँ-बाप के काम आती हैं। इसी भावभूमि पर है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-7090-1

68. बैजू मामा

रामवृक्ष बेनीपुरी पृ. 24 ₹ 18.00

यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो चोरी करते हुए पकड़ा जाता है। बाद में वह शर्म के मारे जेल छोड़कर अपना मुंह किसी को भी दिखाना नहीं चाहता।

ISBN 978-81-237-0420-3

69. बैरंग लिफाफा

आईदान सिंह भाटी पृ. 16 ₹ 12.00

इस कहानी में फौजी पति की पत्नी का दर्द पत्र के माध्यम से व्यक्त हुआ है। पत्रों की भी बड़ी जीवंत भाषा होती है। इस पुस्तक में वह मौजूद है। ISBN 81-237-4770-5

70. भय की बीमारी

तारादत्त पंत पृ. 16 ₹ 16.00

एक बहू को शादी के काफी अरसे तक बच्चा नहीं हुआ। सास ने ओझा की मदद ली मगर सब बेकार साबित हुआ। कहानी बताती है कि ओझा लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। इन सबसे बचना चाहिए। ISBN 978-81-237-4355-4

71. भीमा जोधा

अब्दुल मलिक खान पृ. 52 ₹ 25.00

यह गाँव से कामकाज की तलाश में शहर गए भीमा की कहानी है। भीमा की पत्नी, जो पढ़ी-लिखी है, शहर में मुसीबत में फंसे भीमा को छुटकारा दिलाती है। यह पुस्तक मुख्यतया स्त्री-शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है। ISBN 81-237-0516-6

72. भूत आया

चित्रा नाईक पृ. 8 ₹ 14.00

यह कहानी गाँवों में भूतों के बारे में मनगढ़ंत बातों के बारे में है। बाग में भूतों द्वारा आम चुराने की बात गाँव में बच्चे-बच्चे की जुबान पर थी, पर अंततः असली चोर पकड़े जाते हैं। उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। ISBN 81-237-0523-9

73. मंगनी की बैलगाड़ी

गोदावरीश महापात्र अनु. : अरुण होता पृ. 16 ₹ 16.00

ओड़िया से अनूदित कहानी का मुख्य पात्र मंगनी है। कहानी बताती है कि कैसे औद्योगिक क्रांति के चलते शहर में मोटरगाड़ी आने से मंगनी को बेरोजगारी और भुखमरी का सामना करना पड़ा और अंत में वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। ISBN 978-81-237-6161-9

74. मछली की आँखें

ज़किया मशहदी पृ. 16 ₹ 11.00

भरे-पूरे परिवार का मुखिया बुढ़ापे में किस कदर अपना दुख परिवार से छिपाता है लेकिन बेटे को पता चल जाता है और बेटा पिता का इलाज कराता है। उर्दू व हिंदी लेखिका की मर्मस्पर्शी रचना। ISBN 978-81-237-4590-7

75. मजेदार गाँव

सतीश उपाध्याय पृ. 20 ₹ 12.00

इस कहानी में अवधराज काका और गाँव का पंडित दो मुख्य पात्र हैं। काका को सदैव चर्चा में रहने और हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की आदत है। पंडित उसकी हर बात का समर्थन कर आए दिन गाँव में अफवाहों को फैलाकर गाँववालों को लूटता था। अंत में इन दोनों की पोल खुल गई। ISBN 978-81-237-5491-8

76. मरना नहीं, जीना है

ब्रह्मानन्द विश्वकर्मा पृ. 8 ₹ 6.00

अशिक्षा के कारण बिलटा के माँ-बाप धोखे से दवाई की जगह खटमल की दवा पी गए और जान गवाँ बैठे। अब पढ़ाई की महत्ता बिलटा समझ गया था। ISBN 81-237-4198-0

77. महाजन

विमल मित्र रूपां. : कमल कुमार पृ. 20 ₹ 13.00

यह कहानी एक ऐसे कंजूस आदमी की है जो अपने इलाज के लिए अपनी दमड़ी खर्च करना नहीं चाहता, उलटे अपने बच्चों को ताना देता है। सारी रकम वह अपने विशेष जूते में रखता था। बेटिकट यात्रा करते समय टाँग गवाँ बैठा और बाद में जिंदगी भी। ISBN 978-81-237-4539-8

78. मास्टर जी

पृथ्वीराज मोंगा पृ. 20 ₹ 12.00

मास्टर जी बच्चों को अच्छी शिक्षा देना अपना परम कर्तव्य मानते थे। जब उनका ही एक छात्र उनसे रिश्वत की माँग करता है तो मास्टर जी बहुत गहरे तक टूट जाते हैं। इसी टूटन की कहानी है मास्टर जी। ISBN 81-237-1798-9

79. मुरब्बी

विष्णु प्रभाकर रूपां. : रमाशंकर श्रीवास्तव पृ. 24 ₹ 14.00

वरिष्ठ कथाकार की यह एक बड़ी रोचक कथा है। भाषा का मिजाज और खूबसूरती इसकी प्रमुख विशेषता है। ISBN 81-237-4618-0

80. मुर्गे ने बाँग दी

शिवप्रसाद सिंह रूपां. : विनीता अग्रवाल पृ. 20 ₹ 14.00

सूखाग्रस्त गाँव में मंगरू लुहार का परिवार कई दिनों से भूखा है। सुनहरे कल की आशा में मंगरू फिर भी काम करता है। ISBN 978-81-237-1320-5

81. मैं हूँ रप्पायी

अनवर अनु. : एच. बालसुब्रह्मण्यम् पृ. 32 ₹ 8.00

रप्पायी इलाके का बदमाश था लेकिन जैसे ही पढ़ाई से नाता जुड़ा तो कैसे मस्ती में झूमने लगा! ISBN 978-81-237-2343-3

82. मौसी पपीतेवाली

देवेन्द्र सत्यार्थी पृ. 18 ₹ 19.00

अविश्वास के इस दौर में भी एक पपीतेवाली की ईमानदारी को दर्शाती एक भावप्रवण कहानी। ISBN 978-81-237-6034-6

83. यार की चिट्ठी

मधुकर सिंह पृ. 42 ₹ 19.00

गरीब-अमीर के संबंधों पर केंद्रित मित्रों के लिए समर्पित प्यार भावना और एकता का संदेश देती एक रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-2737-0

84. राजा के दो सींग

ऋषिमोहन श्रीवास्तव पृ. 12 ₹ 17.00

लोककथा पर आधारित इस कहानी में रामगढ़ रियासत के वीर सिंह नामक एक राजा के सिर में अचानक असहनीय दर्द उठा। उसने सिर की मालिश के लिए अपने नौकर बनवारी को बुलाया। नौकर ने जैसे ही राजा के सिर से मुकुट उतारा तो वह सिर में राजा के दो सींग देखकर मंद-मंद मुस्कुराने लगा। राजा ने उसे हिदायत दी कि वह इस राज को भविष्य में किसी के सामने न बताए। क्या बनवारी राजा के इस राज को छुपा पाएगा? जानने के लिए कहानी पढ़ें।

ISBN 978-81-237-6549-5

85. रामसजीवन की माँ

गोविन्द मिश्र रूपां. : प्रेम जनमेजय पृ. 20 ₹ 9.00

रामसजीवन और जटाशंकर दोनों पड़ोसी हैं, लेकिन दोनों का स्वभाव एक-दूसरे से अलग है। किंतु गुस्सैल जटाशंकर रामसजीवन की बेटी की शादी में गुस्सा भूल उसकी बेटी की विदाई करता है।

ISBN 978-81-237-2349-0

86. राम बाबू का आफिस

प्रेम सिंह नेगी पृ. 12 ₹ 17.00

अनुशासन के महत्व को दर्शाती शिक्षाप्रद कहानी। ISBN 978-81-237-0588-0

87. राम बड़ा है

हबीब कैफ़ी पृ. 16 ₹ 8.00

यह कहानी दो दुकानदारों की है। एक बड़ा दुकानदार है जो मूर्तियाँ बेचता है। वह अपने सामने नौजवान दुकानदार को पसंद नहीं करता, लेकिन वही नौजवान जब मुसीबत के वक्त खून देकर उसकी जान बचाता है तो मिस्रीलाल अपनी कड़वाहट हमेशा के लिए भूल जाता है।

ISBN 81-237-4722-5

88. रामायण

हंसा मेहता पृ. 36 ₹ 25.00

रामायण का सरल और संक्षिप्त रूप नवसाक्षरों के लिए रोचक भाषा में प्रस्तुत।

ISBN 978-81-237-0190-5

89. रेवा की वापसी

सीमा व्यास पृ. 16 ₹ 18.00

प्रस्तुत कहानी में रेवा नामक नवयुवती शादी में दहेज की माँग पूरी न होने पर बारात के वापस चले जाने से दुखी और अपमानित होकर अपनी जीवन लीला नर्मदा नदी में डूबकर समाप्त करने जा ही रही थी कि एक साधु ने उसे जीवन का महत्व समझाकर आत्महत्या से बचा लिया।

ISBN 978-81-237-6554-9

90. रोशनी

अनुराग वाजपेयी पृ. 16 ₹11.00

राजस्थान के बाड़मेर की पृष्ठभूमि में रची इस कहानी में अंधविश्वास के कारण एक छोटी बच्ची की बलि चढ़ा देने का करुण और मार्मिक विवरण है। ISBN 978-81-237-6034-6

91. लाला पटेल की 'लायबरी'

रमणलाल व. देसाई रूपां. : सुषमा मेढ़ पृ. 28 ₹ 15.00

साक्षरता अभियान की सार्थकता के लिए गाँवों में पुस्तकालयों की अति आवश्यकता है। एक अनपढ़ ग्रामीण लाला पटेल ने अपने गाँव के लोगों में पुस्तकों की ललक कैसे जगाई? यह इस कहानी में प्रस्तुत है। ISBN 978-81-237-1756-2

92. वकील की फीस

जीवन यदु पृ. 18 ₹ 13.00

निरक्षरता शोषण का कारण बनती है। वकील साहब ने गरीब ग्रामीणों को साहूकार के चंगुल से बचाया और फीस के रूप में अक्षर ज्ञान माँगा। ISBN 978-81-237-1827-9

93. विकास की ओर

राधेलाल नवचक्र पृ. 16 ₹ 10.00

कहानी का मुख्य पात्र धनेसर काका है। गाँव की बड़ी से बड़ी मुसीबत को वे तुरंत दूर कर देते थे। गाँव में उनकी बात टालने वाला कोई नहीं था। उन्होंने गाँव के चार पढ़े-लिखे युवकों को गाँव के विकास में योगदान देने के प्रति जागरूक किया। ISBN 978-81-237-5608-0

94. विधवा का बेटा अनंता

फकीरमोहन सेनापति अनु. : अरुण होता पृ. 24 ₹ 25.00

विधवा के बहादुर बेटा अनंता की यह कहानी हमें बताती है कि किस प्रकार अनंता ने डूबते गाँव को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। ISBN 978-81-237-6344-6

95. शैतान सिंह

गिरीश पंकज पृ. 20 ₹ 6.00

मनसुख गाँव का पढ़ा-लिखा मेहनती लड़का था। गाँव के नौजवान लड़कों को मिट्टी का हुनर सिखाते-सिखाते थानेदार से उलझ बैठा। थानेदार को किस प्रकार सबक मिला? बताती है यह रोचक कथा। ISBN 978-81-237-2722-4

96. सच्ची सहेली

नासिरा शर्मा पृ. 12 ₹ 12.00

रेशमा पढ़ाई कर टीचर बन गई। तब कहीं जाकर शकूर जूते वाले को शिक्षा का सही अर्थ समझ में आया। महिला के अधिकार से संबंधित एक असरदार रचना। ISBN 978-81-237-2735-6

97. सवा सेर गेहूँ

प्रेमचंद रूपां. : मन्नू भंडारी पृ. 32 ₹ 25.00

इस कहानी में अमर कथाकार ने उच्च कोटि के साहूकार द्वारा गरीब किसान मजदूरों का शोषण दिखाया है। मजदूर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपना कर्ज नहीं चुका पाता। ISBN 978-81-237-0419-7

98. सिरकटा बरगद

सुरेश सलिल पृ. 12 ₹ 18.00

सन् 1857 की लड़ाई के दौरान शहीद हुए चौधरी कस्तूरी सिंह की शौर्य गाथा।

ISBN 978-81-237-0589-7

99. सुबह का इंतजार

पंकज भार्गव पृ. 12 ₹ 17.00

प्रस्तुत कहानी रघु और लाजो नाम के ऐसे कामचोर पति-पत्नी पर केंद्रित है जो अलग-अलग तरीके अपनाकर लोगों को ठगते थे। एक रोज दोनों ने शहर जाकर अधिक पैसा कमाने का विचार किया। शहर जाकर उन्हें अहसास हुआ कि रोज-रोज की इस जिल्लत भरी जिंदगी से बेहतर मेहनत से कमाकर खाना है। एक रोचक और शिक्षापरक कहानी। ISBN 978-81-237-6522-8

100. सुबह का भूला

बटरोही पृ. 24 ₹ 8.00

सोबन पहलवान शराब पीने की बुरी आदत से अपनी ताकत, इज्जत सब खो बैठता है, लेकिन एक घटना उसके जीवन को बदल देती है। ISBN 81-237-0006-7

101. सुदामा की मुक्ति

अमर गोस्वामी पृ. 24 ₹ 8.00

यह एक ऐसे गुरुजी की कहानी है जिनका उद्देश्य है कि 'हर बच्चे को सही और बेहतर शिक्षा मिले।' वे इस दिशा में कामयाब भी हुए। ISBN 81-237-3398-4

102. सुनहरी भोर का सपना

भगवती लाल व्यास पृ. 12 ₹ 9.00

जैसलमेर के आम आदमी के जीवन से जुड़ी सच्चाई का चित्र खींचती है यह पुस्तक।
ISBN 978-81-237-4732-3

103. सोन पहाड़ी का रहस्य

चित्रा नाईक अनु. : अंजला महर्षि पृ. 28 ₹ 15.00

ग्रामीणों के अंधविश्वासी होने का लाभ उठाकर डकैतों ने सोन पहाड़ी के मंदिर को अपना अड्डा बना लिया था। शहर में पढ़ने वाले लड़के जब छुट्टियों में गाँव आए तो उन्होंने हिम्मत से उन डकैतों को पकड़ कर रहस्य दूर किया। ISBN 81-237-1278-6

104. हैसियत

परदेशीराम वर्मा पृ. 20 ₹ 12.00

हिंदी के सुपरिचित रचनाकार की यह परंपरावादी मानवीय सरोकारों की एक आदर्श रचना है।
ISBN 81-237-3742-7

105. क्षमादान

प्रवासी विनयकृष्ण पृ. 12 ₹ 11.00

एक युवक रमजान के बेटे की हत्या कर देता है और उसी के घर में पनाह माँगता है। अपने घर में पनाह लिए अपराधी के बारे में रमजान को बाद में पता लग जाता है। पर वह उसे क्षमादान देता है। ISBN 978-81-237-1667-1

जीवनचरित

1. गुरु गोविंद सिंह

गोपाल सिंह अनु. : शशि सहगल पृ. 40 ₹ 19.00

महाराजा गुरु गोविंद सिंह के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रसंग इस पुस्तक में हैं। कैसे गुरु जी ने अपने जीवन में संघर्ष किया और दूसरों के पथ-प्रदर्शक बने, इसकी भी प्रेरणा इस पुस्तक को पढ़कर मिलती है।

ISBN 978-81-237-5868-8

2. गोविंद गुरु

ज्योति पुंज पृ. 44 ₹ 30.00

राजस्थान के भील कबीले के सरदार का नाम गोविंद गुरु था। उसने अपने कबीले को कुछ अच्छे गुण ग्रहण करने सिखाए और अंत में कबीले की अन्याय के विरुद्ध लड़े गए युद्ध में विजय हुई। ISBN 978-81-237-0848-5

3. चंदन पानी

आशा श्रीधर पृ. 12 ₹ 12.00

महान संत रविदास की संक्षिप्त जीवनी। ISBN 978-81-237-2581-9

4. तीन पत्र यरवदा से

मोहनदास करमचंद गाँधी चयन-संपादन : वर्षा दास पृ. 20 ₹ 12.00
अनु. : सोमेश्वर पुरोहित

इस पुस्तक में गाँधी जी द्वारा जेल से लिखे गए तीन पत्र हैं जो वास्तव में उच्च कोटि के विचार हैं जो हमें जागरूक होना सिखाते हैं।

ISBN 978-81-237-4828-3

5. बात जवाहरलाल की

देसराज गोयल पृ. 60 ₹ 25.00

लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता, विश्व शांति, विज्ञान, प्रकृति आदि विषयों पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारों का संकलन। ISBN 978-81-237-1204-8

6. बुल्लेशाह

मनोरमा दीवान पृ. 20 ₹ 19.00

सूफी संत कवि बुल्लेशाह के जीवन की एक रोचक घटना प्रस्तुत कहानी में दी गई है।

ISBN 978-81-237-5588-5

7. परमवीर सेनानी

अक्षय कुमार जैन पृ. 32 ₹ 25.00

पुस्तक में आठ परमवीर चक्र से सम्मानित सैनिकों की चर्चा की गई है। इन्हें 1947, 1962, 1965 और 1971 में हुए युद्धों में अद्‌भुत वीरता दिखाने के लिए सम्मानित किया गया है।

ISBN 978-81-237-0616-0

8. बहादुरी की तीन पीढ़ियाँ

श्याम विमल पृ. 16 ₹ 11.00

1857 की भारतीय क्रांति के एक महान वीर कुँअर सिंह, उनके पिता साहबजादा सिंह एवं दादा उमराव सिंह की बहादुरी के किस्सों का इस पुस्तक में वर्णण किया गया है।

ISBN 978-81-237-5893-0

9. बापू की बातें

उमाशंकर जोशी पृ. 28 ₹ 35.00

महात्मा गाँधी के जीवन की कुछ आदर्श घटनाओं की रोचक प्रस्तुति।

ISBN 978-81-237-0112-7

10. बिरसा की कहानी

महावीर प्रसाद सिंह 'माधव' पृ. 12 ₹ 16.00

झारखंड में बिरसा नामक एक वीर ने अंगरेजों के अत्याचार के विरुद्ध बड़ी लड़ाई लड़ी। अंत में अंगरेजों ने उन्हें पकड़ लिया, लेकिन बिरसा की बहादुरी का उन्होंने भी लोहा माना।

ISBN 978-81-237-6207-4

11. याद जवाहरलाल की

देसराज गोयल पृ. 64 ₹ 25.00

सरल और सुबोध शैली में लिखी गई भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जीवनी।

ISBN 978-81-237-0514-9

12. रानी दुर्गावती

ठाकुर भूपतिसिंह पृ. 12 ₹ 10.00

बुंदेली रानी दुर्गावती की शौर्य गाथा। ISBN 978-81-237-2575-8

13. वीरवर कल्ला राठौड़

उपेन्द्र अणु पृ. 16 ₹ 11.00

मेड़ता के राजकुमार वीरवर कल्ला राठौड़ प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र है। साहसी एवं स्वाभिमानी राजकुमार ने तत्कालीन बादशाह की गुलामी स्वीकार न कर उसका बहादुरी से सामना किया। ISBN 978-81-237-5560-1

14. वीर बालक

राजेन्द्र अवस्थी पृ. 28 ₹ 25.00

इस पुस्तक में उन वीर बालकों की कहानियाँ कही गई हैं, जो पौराणिक कथाओं के रूप में हमारे जीवन का एक अंग बन गई हैं। ISBN 978-81-237-0189-9

15. संत जम्भेश्वर

इन्दिरा विश्नोई पृ. 12 ₹ 9.00

नागोर परगने के गाँव पापासार में एक राजपूतवंशी के घर जन्मे जम्भेश्वर की जीवनी।

16. सच की खोज

लीला जार्ज पृ. 32 ₹ 25.00

आकर्षक चित्रों सहित गौतम बुद्ध के जीवन का रोचक विवरण। ISBN 978-81-237-0181-3

शिक्षापरक

1. खाली कुरसी

अलका सिन्हा पृ. 16 ₹ 15.00

रतनमा एक बुजुर्ग महिला हैं, लेकिन अपने पोते की जिद के आगे उनकी एक नहीं चलती और वह प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में जाने के लिए विवश होती हैं। वहाँ जाकर अपनी जैसी अनेक प्रौढ़ाओं को देखकर उन्हें भी पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। ISBN 978-81-237-7055-0

2. पढ़ना है

अशोक 'अंजुम' पृ. 20 ₹ 20.00

सात कलाकार एक नाटक खेलते हैं। इसमें अनपढ़ होने की वजह से कितनी गलतफहमी हो जाती है इसका वर्णन पढ़ाई के संदेश के साथ अच्छे तरीके से दिया गया है।

ISBN 978-81-237-6511-2

3. पुस्तक की दुकान

पुष्पा सिंह 'विसेन' पृ. 16 ₹ 16.00

झारखंड की पृष्ठभूमि पर लिखी इस कहानी में जमींदारों द्वारा निचले तबके के लोगों को दबाकर रखने की प्रवृत्ति के कारण उनके शैक्षणिक विकास में बाधा और कैसे एक बालक अपनी इच्छा शक्ति से इस प्रपंच से बाहर निकलकर पढ़-लिखकर योग्य बनता है इसका प्रेरणाप्रद वर्णन है।

ISBN 978-81-237-6545-7

4. पुस्तक मेरा मित्र

कामना झा पृ. 36 ₹ 15.00

पुस्तक से जी चुराने वाले कभी तरक्की नहीं कर पाते। जो पुस्तक को अपना मित्र बनाते हैं सफलता हर कदम उनके पांव चूमती है। इसी भावभूमि पर है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-6668-3

5. मुन्नी का स्कूल

सुषमा भंडारी पृ. 16 ₹ 15.00

एक चतुर्थवर्गीय कर्मचारी की लड़की पढ़-लिखकर अपने बलबूते शिक्षक बन जाती है और एक रेहड़ीवाले की बेटी, मुन्नी को स्कूल में दाखिला दिलाने का जतन करती है। पढ़ाई और शिक्षा के प्रति प्रेरणा जगाती पुस्तक। ISBN 978-81-237-7079-6

6. सब रो पड़े

हूंदराज बलवाणी पृ. 16 ₹11.00

अनपढ़ता अभिशाप है। एक पत्र न पढ़ पाने पर कैसे गलतफहमी हो गई और पत्र नहीं पढ़ पाने वाले अशिक्षित बुढ़िया, दूधवाला, फुग्गेवाला सब रो पड़े। इसे प्रेरणाप्रद ढंग से समझाया गया है।

ISBN 978-81-237-6628-7

हास्य-व्यंग्य

1. झूठ का परिणाम

सुरेन्द्र दुबे पृ. 12 ₹ 11.00

यह कहानी रामलाल की है, जिसका झूठ बोलने में कोई मुकाबला नहीं। गुदगुदाती और मुस्कराने को मजबूर करती रचना। ISBN 81-237-2683-4

2. ठाकुर साहब का व्रत

गोविंद मिश्र पृ. 12 ₹ 13.00

व्रत रखना कोई हँसी-मजाक नहीं, यह ठाकुर साहब ने व्रत रखकर जाना; एक रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-6170-1

3. नुस्खा

लाल सिंह अनु. : सुनीता पृ. 12 ₹ 13.00

जब अपने पर पड़ी तो उक्ति चरितार्थ हुई। रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-6162-6

4. पति-पत्नी

निशात फारूक पृ. 12 ₹ 17.00

ताकतवर पति एवं साहसी पत्नी की रोचक कथा, जो अपनी शक्ति एवं बुद्धिमत्ता से डाकुओं को भी भागने पर मजबूर कर दे। संदेशपरक रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-5969-7

5. बजरंगी की बारात

सुभाष चंदर पृ. 20 ₹ 12.00

बजरंगी शादी के लिए तैयार हुआ। बारात चली और बैरंग लौट आई। क्यों लौटी? इसे जानने के लिए पढ़िए यह हास्य कथा। ISBN 81-237-4758-6

6. मोबाइल देवता

प्रेम जनमेजय पृ. 18 ₹ 13.00

कभी-कभी मोबाइल को लोग भगवान मान लेते हैं तो कभी शैतान। बहुत ही रोचक कहानी। ISBN 978-81-237-6692-8

7. शराबी नंबर एक

प्रेम सिंह नेगी पृ. 16 ₹ 16.00

हास्य शैली में गाँव में शराब की आदत पर लिखी गई एक प्रेरणादायक कहानी। दुकानदार ने उन शराबियों की सूची बनाई हुई है जिनकी निकट भविष्य में मृत्यु हो सकती है। जब नं. एक चल बसता है तो नं. दो उसकी जगह ले लेता है। ISBN 978-81-237-0527-9

8. संतु गप्पी

गुरदयाल सिंह पृ. 12 ₹ 18.00

कमाल का गप्पी था संतु जो एक चूहे से डर गया। वरिष्ठ कथाकार की एक बेहद रोचक कथा। ISBN 978-81-237-5986-9

9. हम किसके फूफा जी हैं

जीतेंद्र वर्मा पृ. 12 ₹ 14.00

सोनपुर के मेले में स्वयं को परम चालाक समझने वाले एक व्यक्ति कैसे एक किशोरवय बालक के द्वारा 'फूफा जी' बना लिया जाता है और अपना सारा माल-असबाब गँवा बैठता है इसकी बड़ी रोचक और हास्यप्रद कथा है। ISBN 978-81-237-7092-5

10. हाय पकवान!

मो. साजिद खान पृ. 20 ₹ 16.00

बड़े परिवार होने की दुश्वारियाँ इस रूप में भी सामने आए कि घर के मालिक को ही अपने बच्चों से छिपकर पकवान बनाने की कवायद करनी पड़े तो इस स्थिति को समझा जा सकता है। एक हास्य एकांकी। ISBN 978-81-237-5894-7

विविध (कानून/रोजगार, विज्ञान व अन्य)

1. आपका सूचना का अधिकार

आभा सिंघल जोशी पृ. 24 ₹ 13.00

नागरिक अधिकारों के बारे में बताती एक उपयोगी पुस्तक। ISBN 978-81-237-4036-2

2. कागज के लिफाफे

उषा पुरी पृ. 36 ₹ 16.00

महिलाएँ भी अपना भरण-पोषण कर सकती हैं। यही बात महिला स्वरोजगार केंद्रित यह पुस्तक बताती है। ISBN 978-81-237-4583-1

3. कानून के फायदे

मीनल दीक्षित अनु. : गीता जैन पृ. 40 ₹ 18.00

कानून के तौर-तरीके जानने का प्रत्येक भारतवासी को अधिकार है। कहानी के अंदाज में कानून की जानकारी बड़े रोचक तरीके से इस पुस्तक में दी गई है। ISBN 978-81-237-3515-3

4. ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम

निखिल डे, ज्याँ द्रेज, रीतिका खेरा अनु. : विपिन कुमार पृ. 68 ₹ 19.00

इस पुस्तक में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है जिसे हर ग्रामीण को जानना बेहद जरूरी है। रोजगार की तलाश में उम्मीद की किरण जगाती पुस्तक सरल भाषा में नवसाक्षरों के लिए तैयार की गई है।
ISBN 978-81-237-4730-9

5. गंगा की ओर

शीला शर्मा रूपां. : सुषमा मेढ़ पृ. 24 ₹ 11.00

उत्तरकाशी से गोमुख की यात्रा का सरल वृत्तांत समेटे इस पुस्तक में गंगा नदी से जुड़े इतिहास और किंवदंतियों का ब्योरा है। ISBN 81-237-0183-7

6. घट

पंकज बिष्ट पृ. 24 ₹ 8.00

बिजली तथा उससे चलने वाले उपकरणों के आगे अन्य पुराने प्राकृतिक साधनों पर निर्भर उपकरण जैसे घट आदि की महत्ता दर्शाती कथा। ISBN 81-237-0779-7

7. चलो चाँद की ओर

तंग सिवरासन अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 16 ₹ 18.00

चाँद से जुड़ी रोचक यात्रा की सैर कराती पुस्तक। ISBN 978-81-237-3777-5

8. जय नर्मदा

दुर्गा पाठक पृ. 12 ₹ 8.00

प्रसिद्ध नदी नर्मदा का उद्‌गम स्थल तथा आगे की राह, उससे जुड़ी पौराणिक कथा आदि का संक्षिप्त विवरण। ISBN 81-237-2576-0

9. जादू का मंतर

रमाकांत 'कांत' पृ. 28 ₹ 20.00

समूह बनाकर लोगों द्वारा हर महीने कुछ बचत करके रकम जमा करने से जरूरत पड़ने पर जरूरतमंद को आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। वे कर्ज लेने से भी बच जाते हैं। यही है जादू का मंतर। ISBN978-81-237-6508-2

10. फिर मुस्काई नीतू

सुषमा दुबे पृ. 16 ₹ 12.00

किशोरवय में पहुँच रही बच्ची नीतू एक बहुत ही प्यारी बच्ची है, साथ ही होनहार छात्रा भी। लेकिन स्कूल के एक कर्मचारी की कुत्सित हरकतों के कारण उसने स्कूल छोड़ दिया और मुस्कराना भी। सच्ची बात पता चलने पर गलत हरकत करने वाले कर्मचारी को सजा मिली और नीतू को स्कूल जाने का हौसला। ISBN 978-81-237-6820-5

11. मत रो सुखिया

मनोरमा दीवान पृ. 16 ₹ 12.00

कथा शैली में फसल बीमा योजना एवं खलिहान बीमा पॉलिसी आदि के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। ISBN 978-81-237-6923-3

12. मल्लिका नूरजहाँ

मनोरमा दीवान पृ. 12 ₹ 11.00

यह कहानी हिंदुस्तान की पहली महिला साम्राज्ञी मल्लिका नूरजहाँ के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करती है। ISBN 978-81-237-5204-4

13. मुक्ति का मार्ग

अनीता चौधरी पृ. 20 ₹ 12.00

बालश्रम जैसी अमानवीय परंपरा के निषेध को दर्शाती एक सशक्त और मार्मिक रचना। ISBN 978-81-237-9567-8

14. मेरी फ्रीडा बेदी

मनोरमा दीवान पृ. 23 ₹ 13.00

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाली पहली ब्रिटिश महिला के जीवन की रोमांचक कथा प्रस्तुत करती एक अत्यंत प्रेरणात्मक कहानी है। ISBN 978-81-237-5301-2

15. रईस

सैयद जावेद हसन पृ. 11 ₹ 12.00

बाल मजदूरी उन्मूलन पर केंद्रित यह कहानी अत्यंत रोचक है। इस कहानी का केंद्रीय पात्र रईस दस-ग्यारह साल का बच्चा है। वह एक बल्ब फैक्टरी में काम करता था। वह बड़ा ही स्वाभिमानी और बहादुर था। उसने मालिक के अन्याय के विरोध में फैक्टरी जाना बंद कर दिया। अंत में इसके मालिक को पुलिस ने बाल मजदूरी के अपराध में जेल में डाल दिया।

ISBN 978-81-237-5107-8

16. रोशनी की नदी

अश्वघोष पृ. 16 ₹ 12.00

राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम की जानकारी रोचक भाषा में कहानी के माध्यम से उत्तरांचल के वरिष्ठ लेखक ने प्रस्तुत की है। ISBN 978-81-237-4735-4

17. विज्ञान के उपहार

मीर नजाबत अली रूपां. : सुभद्रा सालवी पृ. 20 ₹ 18.00

इस पुस्तक में दुनिया की दिशा बदलने वाले पहियों, भाप इंजन, सूक्ष्मदर्शी, प्रिंटिंग प्रेस आदि के आविष्कार की रोचक कहानियाँ, कार्टून तथा चित्रों के माध्यम से दर्शाई गई हैं।

ISBN 978-81-237-0180-6

18. हिमालय की चोटी पर

बचेन्द्री पाल रूपां. : तारा जायसवाल पृ. 32 ₹ 13.00

एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला की आत्मकथा। ISBN 81-237-0182-9

19. ऐसे बदली नाक की नथ

मनोहर चमोली मनु पृ. 16 ₹ 9.00

अपने अधिकारों के लिए लड़ने में शर्म कैसी? उपभोक्ता मंच में शिकायत कर न्याय दिलाती रचना। ISBN 81-237-4408-0

20. डंडे का डर

राजुरकर राज पृ. 10 ₹ 11.00

स्थानीय दुकानदार जब सामान देने में मिलावट करता है तो कैसे शिकायत होने पर माफी माँगता है। उपभोक्ता कानून पर सरल भाषा में तैयार पुस्तक। ISBN 81-237-4802-3

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास किताब क्लब

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पाठकों की भाषा, संस्कृति, आयु-वर्ग और रुचियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। इस प्रकार विज्ञान, कला, पर्यावरण तथा कई अन्य विषयों के सूचना-प्रधान साहित्य से लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों के कथा साहित्य; और बच्चों के लिए सुंदर ढंग से चित्रित साहित्य तक व्यापक विषयों पर न्यास की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें 32 भारतीय भाषाओं और अँग्रेजी में, उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं। न्यास का लगातार यह प्रयास रहा है कि वह अपने प्राधिकृत पुस्तक विक्रेताओं के एक बेहतर नेटवर्क के अलावा देश के प्रत्येक जिले में किताब क्लब सदस्यों के नामांकन के द्वारा अपनी किताबें पहुँचाए।

न्यास की पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए न्यास 1994 से ही एक किताब क्लब योजना का संचालन कर रहा है।

नियम एवं शर्तें

सदस्यता

1. भारत का कोई भी व्यक्ति या संस्था राष्ट्रीय पुस्तक न्यास किताब क्लब का सदस्य बन सकता है।
2. व्यक्ति के लिए 100/-रुपये तथा संस्थाओं के लिए 500/- रुपये का नाममात्र का आजीवन अप्रतिदेय सदस्यता शुल्क।

मुख्य विशेषताएँ

1. सदस्यों को एक विशेष परिचय नंबर के साथ सदस्यता कार्ड जारी किया जाएगा।
2. किताब क्लब के सदस्य न्यास के क्षेत्रीय कार्यालयों, प्रदर्शनी/पुस्तक मेला स्टॉल, सचल वाहन एवं न्यास के अन्य विक्रय केंद्रों से न्यास की पुस्तकों की खरीद पर 20 प्रतिशत की छूट पा सकते हैं।
3. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास सांस्थानिक सदस्यों को न्यास के मासिक बुलेटिन, सूचीपत्र तथा अन्य प्रचार सामग्री नियमित रूप से भेजेगा।

सूचीपत्र, अन्य प्रचार/सूचना सामग्री तथा हमारे मुद्रित बुलेटिनों की सॉफ्ट कॉपी किसी व्यक्तिगत सदस्य को उनके अनुरोध पर डाक/ई-मेल द्वारा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

डाकखर्च

4. पुस्तकें वी.पी.पी./बुक पोस्ट (अग्रिम भुगतान होने पर) से भेजी जाएँगी। 200 रुपये या उससे कम के आदेश पर पूरा डाकखर्च जोड़ा जाता है और 201 रुपये से अधिक के आदेश पर न्यास पूरा डाकखर्च वहन करेगा।

इंडिका इन्फोमीडिया, जनकपुरी, नई दिल्ली–58 द्वारा लेजर टाइपसेट।

किताब क्लब सदस्यता प्रपत्र (व्यक्तिगत/सांस्थानिक)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
वसंत कुंज, फेज-II, नई दिल्ली-110070
दूरभाष : 011-26707700 फैक्स : 011-26121883
ई-मेल : nbtindia@nbtindia, वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

(कृपया इस प्रपत्र के साथ **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया** के नाम 100/500 रुपये का बैंक ड्राफ्ट भेजें)।

1. नाम/संस्था (स्पष्ट अक्षरों में).....
   .....
2. पूरा पता.....
   .....
   .....पिन कोड.....
3. फोन/मोबाइल नं. .....
4. ई-मेल.....
5. व्यवसाय.....
6. उम्र.....
7. बैंक ड्राफ्ट का विवरण.....
   बैंक ड्राफ्ट सं. एवं तिथि.....
   द्वारा जारी.....
   प्राप्य बैंक.....

मैंने एनबीटी किताब क्लब की सदस्यता के नियम-विनियम पढ़ लिए हैं और ये मुझे मान्य हैं ।

हस्ताक्षर

स्थान : .....
दिनांक : .....
(क्रम सं. 1,2,4 तथा 7 अनिवार्य हैं)।

मैं.....श्री/श्रीमती/सुश्री.....

से किताब क्लब सदस्यता के लिए.....रुपये प्राप्त करता हूँ।

(हस्ताक्षर)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के लिए